



पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

2024-25

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम् (BV)

उद्देश्य :

श्री वामनजयादित्यविरचित पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रवृत्ति काशिका है। इसमें व्याकरण शास्त्र का सार संग्रह किया गया है, जो अन्यत्र वृत्ति भाष्यादि ग्रन्थों में विस्तृत रूप से था। इसके अध्यापन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

- अष्टाध्यायी के सूत्रों का अर्थ, उदाहरण, शब्दसिद्धि तथा सूत्रों में निर्दिष्ट पदों का विस्तृत विवेचनपूर्वक बोध कराना।
- व्याकरण शास्त्र के संस्कृत भाषा सम्बन्धी एवं दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- कात्यायन मुनि प्रणीत वार्तिकों की सप्रसंग अर्थ उदाहरण सहित व्याख्या का बोध कराना।
- पाणिनिमुनि रचित गणपाठ एवं उसमें पठित गणसूत्रों तथा कारिकाओं का ज्ञान कराना।
- महर्षि पतञ्जलि द्वारा भाष्य में निर्णीत सिद्धान्तों का बोध कराना।
- शब्द शास्त्र का सम्पूर्णता से बोध कराना । यतो हि -

“शब्दे ब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति” इति

- वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य के विविध ग्रन्थों का अध्ययन कराना। जिससे कि अपने वैदिक ग्रन्थों एवं संस्कृत साहित्य का परिचय प्राप्त हो सके।

परिणाम-

- अष्टाध्यायी के सूत्रों का अर्थ उदाहरण शब्दसिद्धि आदि एवं व्याकरण के सिद्धान्तों के बोध से विद्यार्थी संस्कृत भाषा में निर्बाध रूप से गति करता है।
- संस्कृत भाषा के ज्ञान से सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को समझने व समझाने में समर्थ हो जाता है।
- दर्शन, गीता उपनिषद् आदि के अध्ययन से वैदिक वाङ्मय के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर समस्त मत पन्थ सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करता हुआ सभी को मार्गदर्शन देता हुआ राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान देता है।
- दर्शन, गीता, उपनिषद् आदि के अध्ययन से वैदिक वाङ्मय के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर संस्कृत व्याकरण के स्पष्ट बोध से, उच्चारण की शुद्धता एवं वक्तृत्व के विकास से वैदिक ज्ञान का मुखरता के साथ उपदेश करता हुआ समाज में फैली हुई मिथ्या मन्यताओं का निराकरण करता हुआ स्वयं को व समाज को श्रेष्ठ मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

B.A. Honours Sanskrit Vyakaran (According to NEP)							
Semester -1							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BVSAMJ-101	काशिकावृत्ति: (प्रत्याहारसूत्रसहितः प्रथमाध्यायप्रथमद्वितीयपादौ)	5	1	0	6
2	Discipline Specific Minor	BVSAMN-102	संस्कृतसाहित्यम्-I	3	1	0	4
3	Inter Disciplinary	BVSAID-103 (1)	प्राचीन भारत का इतिहास (प्रारम्भ से मौर्यकाल तक)	3	1	0	4
		BVSAID-103 (2)	समाजशास्त्र का परिचय				
		BVSAID-103 (3)	भारतीय संविधान				
		BVSAID-103 (4)	योगदर्शनम् (समाधिपादः व्यासभाष्यसहितः)				
4	Ability Enhancement	BVSAAE-104	Communicative English	1	0	2	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BVSASE-105 (1)	योग चिकित्सा-I	1	1	2	3
		BVSASE-105 (2)	Basics Knowledge of Vocal & Instrumental				
		BVSASE-105 (3)	Sanskrit With Technology				
6	Value Added	BVSAVA-106 (1)	भारतीय संस्कृति बोध-I	2	1	0	3
		BVSAVA-106 (2)	पर्यावरणविज्ञानम्	0	0	6	
Total Credits							22
Semester -2							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BVSAMJ-201	काशिकावृत्ति:-प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ	5	1	0	6
2	Discipline Specific Minor	BVSAMN-202	संस्कृतसाहित्यम्-II	3	1	0	4
3	Inter Disciplinary	BVSAID-203 (1)	प्राचीन भारत का इतिहास	3	1	0	4
		BVSAID-203 (2)	भारतीयसमाज				
		BVSAID-203 (3)	भारत का स्वतन्त्रता संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत				
		BVSAID-203 (4)	योगदर्शनम् (साधनपादः व्यासभाष्यसहितः)				
4	Ability Enhancement	BVSAAE-204	Advanced Communicative English	1	0	2	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BVSASE-205 (1)	योग चिकित्सा-II	1	1	2	3
		BVSASE-205 (2)	Intermediate Knowledge of Vocal & Instrumental				
		BVSASE-205 (3)	गोविज्ञानम्				
6	Value Added	BVSAVA-206 (1)	भारतीय संस्कृति बोध-II	2	1	0	3
		BVSAVA-206 (2)	योगविज्ञानम् (प्रयोगात्मकम्)	0	0	6	
Total Credits							22
For those students who want to carry the course for Second year							44
Those students want to exit in 1st year they need to complete summer training of credit							4
Grand Total							48
*4 credit over and above of 44 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training							

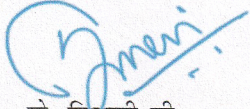
Semester -3							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-301	काशिकावृत्ति: - द्वितीयोऽध्यायः	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-302	काशिकावृत्ति:-तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ	4	1	0	5
3	Discipline Specific Minor	BVSAMN-303	संस्कृतसाहित्यम्- III	3	1	0	4
4	Inter Disciplinary	BVSAID-304 (1)	स्वर्णकाल का इतिहास	1	1	0	2
		BVSAID-304 (2)	समाजशास्त्रीय सिद्धान्त				
		BVSAID-304 (3)	वैशेषिकदर्शनम् (प्रथमाध्यायः भाष्यसहितः)				
5	Ability Enhancement	BVSAAE-305	सरल मानक संस्कृतम्	2	0	0	2
6	Skill Enhancement/ Internship	BVSASE-306 (1)	सस्वरः वेदपाठः	1	0	4	3
		BVSASE-306 (2)	Advance Knowledge of Vocal & Instrumental				
		BVSASE-306 (3)	यज्ञविज्ञानम्				
Total Credits							22
Semester -4							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-401	काशिकावृत्ति:- तृतीयाध्यायतृतीयपादः	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-402	काशिकावृत्ति: तृतीयाध्यायचतुर्थपादः	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-403	काशिकावृत्ति: - चतुर्थोऽध्यायः	5	1	0	6
4	Discipline Specific Minor-1	BVSAMN-404	वैदिकसाहित्यं दर्शनपरिचयश्च-I	3	1	0	4
5	Ability Enhancement	BVSAAE-405 (1)	Communication Technology	2	0	0	2
		BVSAAE-405 (2)	Introduction to Journalism & Mass Communication	1	1	0	
Total Credits							22
Semester -5							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-501	काशिकावृत्ति: - पञ्चमोऽध्यायः	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-502	काशिकावृत्ति: -षष्ठाऽध्यायप्रथमपादः	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-503	काशिकावृत्ति:-षष्ठाऽध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ	4	1	0	5
4	Discipline Specific Minor	BVSAMN-504	वैदिकसाहित्यं दर्शनपरिचयश्च-II	3	1	0	4
5	Internship	BVSASE-505	Yog Ayurved & Naturopathy	2	0	4	4
Total Credits							22

Semester -6							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-601	काशिकावृत्ति: -षष्ठाऽध्यायचतुर्थपादः	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-602	काशिकावृत्ति: -सप्तमोऽध्यायः	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-603	काशिकावृत्ति: अष्टमोऽध्यायः	4	1	0	5
4	Discipline Specific Minor-1	BVSAMN-604	वैदिकसाहित्यं दर्शनपरिचयश्च-III	3	1	0	4
5	Discipline Specific Minor-2	BVSAMN-605	ज्योतिष् एवं लघु शोध प्रबन्ध	3	1	0	4
Total Credits							22

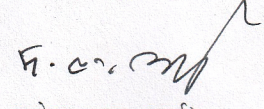
विषय विशेषज्ञ

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

विषय विशेषज्ञ


प्रो. शिवानी वी.
डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत
विश्वविद्यालय, बैंगलुरु

विभागाध्यक्ष


(डॉ. मनोहर लाल आर्य)
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (प्रत्याहारसूत्रसहितः प्रथमाध्यायप्रथमद्वितीयपादौ)

Code- BVSAMJ-101, Credit - 6

उद्देश्य :

- लौकिक एवं वैदिक शब्दों का अनुशासन एवं अनुशासन विधि प्रत्याहार बोध प्रदान कर विद्यार्थियों की बुद्धि को सूक्ष्म बनाना ।
- संज्ञा सूत्रों, परिभाषा सूत्रों और स्थानिवद् भाव का बोध कराकर व्याकरण ग्रन्थ में उन सूत्रों का बोधन कराना ।
- अतिदेश, स्वर, अशिष्य प्रकरण तथा एकशेष प्रकरण का बोध।

परिणामः

- गुण, वृद्धि, संयोगादि संज्ञाओं को अन्य ग्रन्थों में पहचान कर एक नवीन ग्रन्थ का साहित्य का निर्माण कराने में समर्थ हो जाते हैं।
- संज्ञा सूत्रों का बोधन कराने में कुशल होकर एक श्रेष्ठ अध्यापक बनकर विद्यार्थियों को विद्वान बनाने में समर्थ हो जाता है।
- स्वर व अच् के भिन्न-भिन्न भेदों को पहचान कर वेदों में स्वरगान में निपुण हो सकते हैं।
- शब्दरूपों की सिद्धि कर पाते हैं एवं प्रकृति प्रत्यय का यथार्थ बोधन कर सम्भाषणादि में उनका प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं।

काशिकावृत्तिः (प्रत्याहारसूत्रसहितः प्रथमाध्यायप्रथमद्वितीयपादौ) -

- इकाई-1 प्रत्याहारसूत्राणि - प्रगृह्यसंज्ञा पर्यन्तम् (1.1.19) 19 घण्टे
वृद्धिः, गुणः, संयोगः, अनुनासिकः, सवर्ण, प्रगृह्यम् ।
- इकाई-2 घुसंज्ञा (1.1.20)-अनेकालिशत् सर्वस्य पर्यन्तम् (1.1.55) 17 घण्टे
घु, घ, संख्या, षट्, निष्ठा, सर्वनाम, अव्ययम्, सर्वनामस्थानम्, विभाषा, सम्प्रसारणम् इत्यादयः ।
- इकाई-3 स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ (1.1.56)-वृद्धसंज्ञा पर्यन्तम् (1.1.74) 16 घण्टे
अतिदेशादयः (स्थानिवदादेशः), टिसंज्ञा, उपधा, वृद्धसंज्ञा इत्यादयः ।
- इकाई-4 गाङ्कुटादिभ्यो... (1.2.1)- उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः (1.2.40)पर्यन्तम् 12 घण्टे
गाङ्कुटादिभ्यो...इत्यादीनि अतिदेशसूत्राणि, ह्रस्व दीर्घ प्लुत संज्ञा उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, स्वरसूत्राणि,पर्यन्तम् ।
- इकाई-5 अपृक्त एकाल् प्रत्ययः (1.2.41)- ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री (1.2.73)पर्यन्तम् 12 घण्टे
उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, स्वरसूत्राणि, अपृक्त, उपसर्जन, प्रातिपदिक संज्ञा, युक्तवद्भावश्च अशिष्यप्रकरणम् ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- आख्यातिकः श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती, प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पूर्णाङ्कः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25

समयः-होरात्रयम्

प्रथमसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- संस्कृतसाहित्यम्- I

Code- BVSAMN-102, Credit – 4

उद्देश्य :

- काव्यदीपिका द्वारा काव्य का सामान्य परिचय, प्रयोजन, शक्तिस्वरूप का बोध कराकर प्राचीन साहित्य की मर्मज्ञता का बोध कराना।
- अश्वघोष विरचित बुद्धचरितम् के माध्यम से शास्त्रीय शैली युक्त काव्य का बोध उत्पन्न करना।
- उपनिषद् एवं गीता के माध्यम से ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग एवं निष्कामकर्म योग का ज्ञान कराना।

परिणामः

- काव्य प्रयोजन/लक्षण और शक्ति त्रय को जानने से छात्र स्वकाव्य निर्माण में दक्ष होकर नव नूतन स्वरचना की ओर अग्रसर होता है।
- बुद्धचरितम् के माध्यम से भगवान् बुद्ध के जीवन में निहित जीवन मूल्यों को धारण करने हेतु अग्रसर होता है।
- उपनिषद् एवं गीता में निहित ज्ञान से स्वयं एवं समाज को श्रेष्ठ बनाता है।

इकाई 1- काव्यशास्त्रम् (काव्यदीपिका शिखा 1-2)

15

काव्यशास्त्रोद्भवसामान्यपरिचयः

काव्यप्रयोजनलक्षणे, शक्तिस्वरूपनिरूपणम्

इकाई 2- नाटकम् (बुद्धचरितम्)

15

(क) नाटकोद्भवः/ कविपरिचयः

(ख) पात्रपरिचयः/ श्लोकव्याख्या

(ग) चरित्रचित्रणम्/ अंकसारः

इकाई 3- उपनिषद्- (ईशोपनिषद्)

10

सर्वत्र ईशदृष्टिः, कर्मविधिः, अभेददृष्टिः, ज्ञानमार्गः, कर्ममार्गः

(क) कण्ठस्थीकरणम्

(ख) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई 4- गीता- अध्याय- 3

15

ज्ञानयोगः, निष्कामकर्मयोगः, अनासक्तभावेन, नियतकर्मणाम् श्रेष्ठता निरूपणम्,

लोकसंग्रहार्थं कर्मणः निष्पत्तिः, भगवते च कर्मणः अपर्णमूढत्यादि ।

(क) श्लोककण्ठस्थीकरणम्

(ख) पदपदार्थज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्-

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
2. बुद्धचरितम् - प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
3. एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
4. श्रीमद्भगवद्गीता, प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशनम्, दिव्ययोगमन्दिर ट्रस्ट पतंजलि योगपीठ।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

प्रथमसत्रम्

तृतीयपत्रम्- प्राचीन भारत का इतिहास (प्रारम्भ से मौर्यकाल तक)

BVSAID-103 (1), Credit – 4

पूर्णाङ्कः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25

समयः-होरात्रयम्

Course Objective

This course introduces to the students a gradual evolution of early civilization in Indian and polity from the age of Mahajanapadas to the age of foreign incursions during the Pre-Gupta period. Beginning with a general description of the political condition in the sixth century B.C., emergence of our early culture like Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, chalkolithic, Harappa and Vedic culture are described in the first two unit and political development of rising Magadha empire described in the third unit and Alexandra's invasion of Indian and the origin, development and decline of Mauryan empire are dealt with in last unit

Course Outcome: Students will able to:

1. Understand the status of the society and culture of ancient India during the Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Harappa, and Bronze ages.
2. Identify Approaches towards the sources and the study of ancient Indian history.
3. Understand about India's Vedic and post-Vedic periods, as well as the rise of Jainism and Buddhism as religions and cultures in ancient India.
4. They will exchange ideas about how to separate the Magadha Empire from the other sixteen Janapadas.
5. Understand Great king Asoka's Dhamma and his inscriptions

इकाई प्रथम-भारतीय इतिहास को जानने के स्रोत, स्रोतों का महत्व, स्रोतों के प्रकार- साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक स्रोत और विदेशी यात्रियों का विवरण, प्रागैतिहासिक काल का परिचय- पुरापाशाण काल: सोहन संस्कृति एवं मद्रासियन संस्कृति, मध्यपाशाणकाल एवं नवपाशाण काल: कृषि का विकास, आग की खोज, पहिये का अविष्कार, प्रागैतिहासिक काल में औजारों का निर्माण और उनके स्वरूप- पुरापाशाण काल, मध्यपाशाण काल, नवपाशाण काल। प्राग् सैन्धाव एवं ताम्र पाशाण काल का परिचय।

इकाई द्वितीय-सैन्धाव सभ्यता: उत्पत्ति और विकास, प्रथम नगरीकरण, सैन्धाव सभ्यता की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य, कला का विकास, सांस्कृतिक स्थल के परिवर्तन के कारण, गंगेटिक संस्कृति: वैदिक काल- वैदिक साहित्य की प्रकृति, ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति, उत्तरवैदिक कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति ।

इकाई तृतीय-सैन्धाव सभ्यता में धार्मिक परम्पराओं की उत्पत्ति और धर्म के विविधआयाम, वैदिक काल में धर्म का स्वरूप, प्रकृति पूजा, इन्द्र का बढ़ता महत्व, अग्नि, वरुण, ऋत और मातृ देवी की पूजा का विकास, उत्तर वैदिक काल में धार्मिक प्रथाओं का विकास: धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ की प्रधानता।

इकाई चतुर्थ-उपनिषदीय धर्म: आत्मा और सर्वोच्च ब्रह्म की अवधारणा। जैन धर्म: महावीर का प्रारम्भिक जीवन और उनकी शिक्षाएं, बौद्ध धर्म: गौतम बुद्ध का प्रारम्भिक जीवन और उनकी शिक्षाएं ।

इकाई पंचम-छठी शताब्दी ई.पू. भारत की राजनीतिक स्थिति (महाजनपद और गणराज्य), मगध साम्राज्य का उदय: हर्यक वंश: बिम्बिसार और अजातशत्रु, शिशुनाग वंश, नंद वंश, महापद्मनंद और घनानंद, सिकंदर का यूनानी आक्रमण, मौर्य वंश: चंद्रगुप्त मौर्य: प्रारम्भिक जीवन और उनका साम्राज्य विस्तार, बिन्दुसार, अशोक: साम्राज्य विस्तार, उनके अभिलेख, धम्म, मौर्य वंश का पतन।

पाठ्य पुस्तक-भार्मा एल. पी. प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022, सिंह उपेन्द्र: प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाशाण काल से 12 वीं शताब्दी ई. तक, दिल्ली 2016 ।

Recommended Readings:

Majumdar, R.C.: Prachin Bharat, Motilal Banarasidas Delhi, 1962.

Raychoudhury, H. C., Political History of Ancient India, Calcutta, 1931.

Goyal, S. R., Magadh, Satawahan, Kushan Samrajyon ka Yug (Hindi), Jaipur

Sharma, R. S., Prarambhik Bharat ka Parichay, (Hindi) New Delhi 2017.

Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019

Shastri, K. A. N., The Age of Nandas and Mauryas, Varanasi, 1967.

Majumdar, R.C. and A. D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. I –V (relevant chapters), Bombay, 1951-1957.

Jha D. N., Ancient India: In Historical Outline, 1997

Jha D. N., Early India: A Concise History, 2004.

अथवा

तृतीयपत्रम्- समाजशास्त्र का परिचय

Code- BVSAID-103 (2) Credit - 4

उद्देश्य-

- समाजशास्त्र का बोध कराना।
- सामाजिक अवधारणाओं से अवगत कराना।
- सामाजिक संरचना से परिचित कराना।
- सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता का ज्ञान कराना।
- संस्कृति एवं सभ्यता का विश्लेषणात्मक बोध कराना।

परिणाम-

- समाजशास्त्र के बोध से समाज में व्याप्त अच्छाईयों व बुराईयों की जानकारी से बुराईयों को छोड़कर अच्छाईयों में जीने के लिए प्रवृत्त हो जाता है।
- सामाजिक अवधारणाओं के अध्ययन से पारिवारिक व सामाजिक एकता व सामंजस्य पूर्वक व्यवहार करने में कुशल हो जाता है।
- संस्कृति व सभ्यता के विश्लेषण से संस्कृति व सभ्यता में पूर्ण निष्ठा व विश्वास रखते हुए उसकी रक्षा करने में तत्पर हो जाता है।

इकाई प्रथम-समाज शास्त्र का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं महत्व, समाज शास्त्र की प्रकृति, सामाजिक विज्ञान के रूप में समाज शास्त्र, समाज शास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञान से सम्बन्ध, भारत में समाज शास्त्र का इतिहास।

इकाई द्वितीय-समाज की मौलिक अवधारणाएँ, समुदाय, समिति एवं संस्थाओं का अर्थ एवं अवधारणा, सामाजिक समूह, मानव एवं पशु समाज, सामाजिक संस्थाएं: परिवार, नातेदारी, विवाह, धर्म, शिक्षा एवं राज्य।

इकाई तृतीय-संस्कृति एवं सभ्यता, सांस्कृतिक बहुलतावाद, बहुसंस्कृतिवाद एवं सांस्कृतिक सापेक्षवाद, संस्कृति की प्रमुख विशेषता: आत्मसातीकरण, पर-संस्कृतिग्रहण एवं एकीकरण, सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रियाएं: प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष।

इकाई चतुर्थ-सामाजिक संरचना, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक प्रतिमान, जनरीतियां, लोकाचार, मूल्य, लोकाचार।

इकाई पंचम-सामाजिक स्तरीकरण: अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व, सामाजिक गतिशीलता: अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व।

पाठ्यपुस्तकम्-गुप्ता, एम. एल. एवं भार्मा, डी. डी., भारत में समाज, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2022

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Haralambos, M.- (1998) Sociology : Themes and Perspectives , OUP, New Delhi
2. Jayaram , N. – (1998) Introductory Sociology , Macmillan India
3. Mukherjee , R. – (1998) Systematic Sociology , Sage Omens
4. T.K. & Venugopal , C.N. – (1993) Sociology , Eastern Book Co.
5. Dube , S.C. – (1992) Understanding change : Anthropological Sociological Perspectives, Vikash Publication House, New Delhi.
6. Smelser, N.J. – (1993) Sociology, Prentice Hall of India Pvt. Ltd. New Delhi
7. Giddens Anthony – (2009) Sociology, Polity Press, London Beteille, Andre – (2002) Sociology Essays on Approach and methods, OUP , New Delhi Gupta
8. Dipankar (Ed.)- Social Stratification, OUP Page 9 of 50 Davis, K.-(1996) Human Society, \
9. Macmillan Goode William, J. – (1998) The Family, Prentice Hall, New Delhi Johnson, Harry A, Sociology , Allied Publishers,

अथवा
तृतीयपत्रम्- भारतीय संविधान
Code- BVSAID-103 (3) Credit-4

उद्देश्य-

- संविधान सभा और संविधान सभा का बोध कराना।
- सरकार के अंगों का ज्ञान कराना।
- संघवाद की अवधारणा से परिचित कराना।
- विकेन्द्रीकरण से अवगत कराना।
- प्रयोगात्मक वक्तव्य का बोध कराना।

परिणाम-

- संविधान के अध्ययन से छात्र के अपने अधिकार व कर्तव्य के बोधपूर्वक समाज व राष्ट्र के विधि व निषेध को जानकर विधि का अनुपालन व निषेध का त्याग करने में समर्थ हो जाता है।
- संघवाद के अध्ययन से केन्द्र व राज्य सरकार की शक्तियों का समुचित उपयोग करता हुआ राष्ट्र के उत्थान व उत्कर्ष में सहयोग प्रदान करता है।
- सरकार के अंगों के अध्ययन से विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका की विधियों के अनुकूल व्यवहार करने में समर्थ हो जाता है।

Introduction: This course acquaints students with the Constitutional design of state structures and institutions, and their actual working over time. The Indian Constitution accommodates conflicting impulses (of liberty and justice, territorial decentralization and a strong union, for instance) within itself. The course traces the embodiment of some of these conflicts in constitutional provisions, and shows how these have played out in political practice. It further encourages a study of state institutions in their mutual interaction, and in interaction with the larger extra-constitutional environment.

UNIT-I: The Constituent Assembly and the Constitution

- Formation and working of the Constituent Assembly
- The Philosophy of the constitution: The Preamble and its Features.
- Fundamental Rights, Directive Principles of State Policy, Fundamental Duties

UNIT-II: Organs of Government

- The Legislature and the Executive
- The Judiciary: Supreme Court and High Courts

UNIT-III: Federalism

- Federalism: Centre-State relations
- Recent trends in federalism

UNIT-IV: Decentralization

- Panchayati Raj Institutions: Composition, Powers and functions of Gram Panchayat, Panchayat Samiti and Zilla Parishad
- Municipalities: Composition Powers and function of Municipal Corporation, Municipal Council and Notified Area Council

Text Books:

1. G. Austin, (2010) 'The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation', New Delhi, Oxford University Press, 15th print.
2. R. Bhargava (ed.) 'Politics and Ethics of the Indian Constitution', New Delhi, Oxford University Press.
3. D. Basu, (2012) 'Introduction to the Constitution of India', New Delhi, Lexis Nexis.

Reference Books:

1. Mehra and G. Kueck (eds.) 'The Indian Parliament: A Comparative Perspective', New Delhi, Konark.
2. B. Kirpal et.al (eds.) 'Supreme but not Infallible: Essays in Honour of the Supreme Court of India', New Delhi, Oxford University Press.
3. L. Rudolph and S. Rudolph, (2008) 'Explaining Indian Institutions: A Fifty Year Perspective, 1956-2006', Volume 2, New Delhi, Oxford University Press.
4. M. Singh, and R. Saxena (2011) (eds.), 'Indian Politics: Constitutional Foundations and Institutional Functioning', Delhi: PHI Learning Private Ltd.
5. K. Roy, C. Saunders and J. Kincaid (2006) (eds.) 'A Global Dialogue on Federalism', Volume 3 Montreal, Queen's University .

अथवा

तृतीयपत्रम्- योगदर्शनम् (समाधिपादः व्यासभाष्यसहितः)

Code- BVSAID-103 (4) Credit- 4

उद्देश्यः-

- योग के विभिन्न उपायों से अवगत करा कर जीवनमूल्यों के प्रति जागरूक करना।
- पातञ्जल योगसूत्र के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।

परिणामः-

- योग के विभिन्न उपायों से अवगत होकर स्वयं को एवं समाज का उचित दिशा में आगे बढ़ाता है।
- योग के सूत्रार्थ एवं भावार्थ का स्पष्ट बोध हो जाने पर वह इस ज्ञान का समाज में प्रखरता से विस्तार करने में समर्थ हो जाता है।

इकाई 1 - योगः, चित्तवृत्तयश्च (सूत्र 1-11)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 2 - वृत्ति निरोधस्य उपायाः (सूत्र 12-22)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 3 - ईश्वरप्रणिधानम् (सूत्र 23-32)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 4 - चित्तप्रसादनस्य विभिन्नोपायाः (सूत्र 33-40)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 5 - समापत्तयः, सबीजनिर्बीजसमाधिश्च (सूत्र 41-51)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- योगदर्शन- स्वामी योगर्षि रामदेव, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित)

भोजवृत्ति-(महाराज भोजदेव)

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
प्रथमसत्रम्
चतुर्थपत्रम्-Communicative English-1
BVSAAE-104 Credit-2

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः:-होरात्रयम्

Programme Objectives

- Develop the students' abilities in grammar, oral skills, reading, writing and study skills
- Students will heighten their awareness of correct usage of English grammar in writing and speaking
- Students will improve their speaking ability in English both in terms of fluency and comprehensibility
- Students will give oral presentations and receive feedback on their performance
- Students will increase their reading speed and comprehension of academic articles
- Students will improve their reading fluency skills through extensive reading
- Students will enlarge their vocabulary by keeping a vocabulary journal
- Students will strengthen their ability to write academic papers, essays and summaries using the process approach.

Course Specific Outcomes

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audioclippings, discussion, written and oral exercises

Unit-1:- Syllables (stress in simple words), Rhythm, Intonation, & Revision of Basic Grammar

- Tenses
- Prepositions
- Articles
- Conjunctions
- Modals
- Direct and indirect Speech

Unit-2: Reading & Writing

- Vocabulary-Homophones, Homonyms
- Analytical Skills
- Editing Skills-Error Correction
- Article Writing
- Reading Comprehension

Unit-3: Listening-

- Audio books
- Podcasts
- Speeches of various renowned Yoga Masters
- Ted Talks

Unit-4:- Spoken English

- Accents and dialects
- Extempore
- Oral Report,
- Debates and GDs
- Public Speaking Skills
- Leadership
- Team Work

Unit-5: प्रयोगात्मक वक्तव्य

Text books: *English Grammar in Use, 4th Edition, Cambridge by Raymond Murphy*, Suggested Sources: Britishcouncil.org

Text books:

- English Grammar in Use, 4th Edition, Cambridge by Raymond Murphy
- Oxford Handbook for the Foundation Programme by Tim Raine & James Dawson & Stephan Sanders & Simon Eccles – eBook

Suggested Sources:

- learnenglish.britishcouncil.org
- learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone
- British Council e-Books for free - pdfdrive.com/british-council-books.html
- Check Your Vocabulary for English for the IELTS Examination - eBook

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

प्रथमसत्रम्

पञ्चमपत्रम्-योगचिकित्सा-१
Code- BVSASE-105 (1) Credit-3

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यो को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1- योग एवं स्वास्थ्य	(10 घण्टे)
इकाई 2- आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य	(10 घण्टे)
इकाई 3- आहार चिकित्सा	(10 घण्टे)
इकाई 4- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य	(10 घण्टे)
इकाई 5- प्राथमिक चिकित्सालय अथवा रसोई घर	(10 घण्टे)

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

अथवा

पञ्चमपत्रम्- **Basics Knowledge of Vocal & Instrumental**

Code- BVSASE-105 (2) Credit-3

Objective-

1. Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
2. Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm. Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves. Practice to Sing five Bhajans.
3. Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics. Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification. Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
4. Study the lives and contributions of prominent musicians.

UNIT- I Basic Knowledge & Definition of Music, Its Origin, Its Methods, Brief about Uttar bhartiya & Carnatic Music , Margi /Desi Sangeet.

UNIT- II Sound, Origin of Sound, Nada, Types of Nada (Aahat/Anahat), Shruti, Swar, Types of Swar, Andolan, Knowledge of 7 Basic Notes & 5 vikrit Notes, Saptak, Types of Saptak.

Bhatkhande Swarlipi padhhati, **Definitions:** Alankar, Matra, Sama, Laya, sthai, Antra, **Kulgeet of UOP,**

5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1),

Relation between Music & Yog, Basic Knowledge of Music Therapy & Its Benefits. Basic Music Related Five shlokas from the Book Raag & Taal Parichay Bhaag –All Parts, Basic Introduction of “**TeenTal**”, Labeled Diagram of Harmonium, Labeled Diagram of Tabla, An Elementry introduction of types of instruments- Tatta , Sushir, Avanaddha, Ghana.

UNIT- III Practice of “AUM” in Kharaj, Breathing Exercise to improve Voice Range and Vocal exercise of 5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1), Practice of Twelve Swars in Saptak, Practice of Two Bhajan, One Patriotic Song, Kulgeet, Five Swastivachan Mantra, Practice of Musical Meditation in Primary stage for Concentration.

UNIT- Iv Harmonium:- Playing Skills of Yagya Prarthna, One Bhajan.

Tabla:- Elementry Practice of Some Tabla Bols(Na Ti Teen, Dha Dhi Dheen), Musical Chart Paper/Model.

Outcomes:-

1. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
2. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music. They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
3. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
4. Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

or
पञ्चमपत्रम्- Sanskrit with Technology
Code- BVSASE-105 (3) Credit-3

Objectives:

- Introduce students to the basic concepts of computers and the fundamental tasks of the computers.
- Provide students with knowledge of computer networks, the internet, and how to use web browsers and electronic mail effectively for academic and personal purposes.
- Enable students to use word processing, spreadsheet, and presentation software effectively.
- Introduce students to online tools for Sanskrit learning and practice, including typing, transliteration, and other Sanskrit-specific applications.

Unit 1 Computer Fundamentals

(8 hours)

What is Computer, Basic Applications of Computer; Components of Computer System, Computer Memory, Concepts of Hardware and Software; What is an Operating System; Basics of Popular Operating Systems; The User Interface, Folders and Directories, Creating and Renaming of files and folders, Opening and closing of different Windows.

Unit 2 Introduction to Internet, WWW and Web Browsers

(7 hours)

Basic of Computer networks; LAN, WAN; Concept of Internet; Applications of Internet; connecting to internet; World Wide Web; Web Browsing software, Basics of electronic mail

Unit 3 Understanding Word Processing/MS Office

(12 hours)

Word Processing Basics; Opening and Closing of documents; Formatting of text; Table handling; Spell check,

Using Spread Sheet: Basics of Spreadsheet; Manipulation of cells; Formulas and Functions; Editing of Spread Sheet,

Making Small Presentation: Basics of presentation software; Creating Presentation; separation and Presentation of Slides; Slide Show; Taking printouts of presentation / handouts.

Unit 4 Online Sanskrit Tools

(6 hours)

Samsâdhanî, Sambhâcâ, Sanskrit Heritage, Tools by IIT Kharagpur

Unit 5 Practical Sanskrit

(12 hours)

Sanskrit Typing and Transliteration (Roman Diacritics)

Outcomes:

- After successfully completing the course, Students will be able to
- 1. Identify the components of a computer system and effectively manage files and folders within an operating system.
- 2. Demonstrate the ability to connect to the internet, browse the World Wide Web using web browsers, and use email systems efficiently for communication and information gathering.
- 3. Create and format the documents in Word, work with spreadsheets in Excel, and prepare presentations using PowerPoint, including the use of basic functions and formulas.
- 4. Develop proficiency in typing Sanskrit, using Roman Diacritics for transliteration, and applying online Sanskrit tools for enhanced language learning and practice.

References:

- Fundamentals of Computers by Rajaraman V
- Computer Fundamentals by P K Sinha

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
प्रथमसत्रम्
षष्ठपत्रम्- भारतीय संस्कृति बोध-I
Code- BVSAVA-106 (1) Credit-3

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य

- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित सूक्त एवं मन्त्रों से अवगत कराना।
- वैदिक षड्दर्शनों का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- गीता एवं उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का बोध कराना।
- भारतीय नीति गन्थों एवं षोडश संस्कारों से अवगत कराना।

इकाई १- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित मंत्र

इकाई २ - योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा दर्शनों का सामान्य परिचय

इकाई ३ - श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डुक्य, प्रश्न) के चयनित प्रसंग

इकाई ४ - नीति गन्थों का परिचय (चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरि)

इकाई 5 - सोलह संस्कारों का विस्तृत वर्णन

परिणाम

- वेद के कतिपय प्रसिद्ध सूक्त एवं मन्त्रों का शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान करने में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
- वैदिक षड्दर्शनों के सिद्धान्तों के तुलनात्मक विश्लेषण में दक्ष हो जाता है।
- गीता एवं उपनिषद् के उपर्युक्त चयनित प्रसंगों का अधिगम होगा।
- नीति-शास्त्रों एवं षोडश संस्कारों का विशद् ज्ञान अर्जित होगा।

निर्धारित ग्रन्थ- भारतीय संस्कृति बोध, प्रो० साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

अथवा
षष्ठपत्रम्- पर्यावरणविज्ञानम्
Code- BVSVA-106 (2) Credit-3

THE OBJECTIVES OF ENVIRONMENTAL SCIENCE ARE:

- (a) Creating the awareness about Environmental Problems among the students.
- (b) Imparting basic knowledge about the Environment and its allied problems and solutions.
- (c) Developing an attitude of concern for the environment.
- (d) Motivating public to participate in environment protection and environment improvement.
- (e) Acquiring skills to help the concerned individuals in identifying and solving environmental problems.
- (f) Striving to attain harmony with Nature.

COURSE SPECIFIC OUTCOMES

The course will empower the undergraduate students by helping them to:

- Gain in-depth knowledge on natural processes and resources that sustain life and govern economy.
- Understand the consequences of human actions on the web of life, global economy, and quality of human life.
- Develop critical thinking for shaping strategies (scientific, social, economic, administrative, and legal) for environmental protection, conservation of biodiversity, environmental equity, and sustainable development.
- Acquire values and attitudes towards understanding complex environmental economic- social challenges, and active participation in solving current environmental problems and preventing the future ones.
- Adopt sustainability as a practice in life, society, and industry.

Unit 1: Multidisciplinary nature of Environmental Science and Classification of Natural Resources (6 lectures)

Definition, scope and importance, Need for public awareness

Renewable and non-renewable resources:

Natural resources and associated problems

- a) Forest resources: Use and over-exploitation, deforestation, case studies. Timber extraction, mining, dams and their effects on forest and tribal people
 - b) Water resources: Use and over-utilization of surface and ground water, floods, drought, conflicts over water, dams-benefits and problems
 - c) Mineral resources: Use and exploitation, environmental effects of extracting and using mineral resources, case studies
 - e) Energy resources: Growing energy needs, renewable and non-renewable energy sources, use of alternate energy sources. Case studies
 - f) Land resources: Land as a resource, land degradation, man induced landslides, soil erosion and desertification
- Role of an individual in conservation of natural resources
 - Equitable use of resources for sustainable lifestyles

Unit 2: Ecosystemsand Functions: (8 lectures)

- Biosphere and its formation
- Concept of an ecosystem
- Structure and function of an ecosystem
- Producers, consumers and decomposers

- Energy flow in the ecosystem
- Ecological succession
- Food chains, food webs and ecological pyramids
- Introduction, types, characteristic features, structure and function of the following ecosystem :-
Forest ecosystem, Grassland ecosystem, Desert ecosystem, Aquatic ecosystems (ponds, streams, lakes, rivers, oceans, estuaries)

Unit 3: Biodiversity and Conservation (8 Lectures)

- Introduction – Definition: genetic, species and ecosystem diversity.
- Value of biodiversity: consumptive use, productive use, social, ethical, aesthetic and option values
- Biodiversity threats
- Hot-spots of biodiversity
- Threats to biodiversity: habitat loss, poaching of wildlife, man-wildlife conflicts.
- Endangered and endemic species of India
- Conservation of biodiversity: In-situ and Ex-situ conservation of biodiversity.

Unit 4: Environmental Pollution (6 lectures)

Definition

- Cause, effects and control measures of:-
 - a. Air pollution
 - b. Water pollution
 - c. Soil pollution
 - e. Noise pollution
 - g. Nuclear hazards
- Solid waste Management: Causes, effects and control measures of urban and Industrial wastes
- Role of an individual in prevention of pollution
- Disastermanagement: floods, earthquake, cyclone and landslides,
 - Water conservation, rain water harvesting, watershed management
 - Climate change, global warming, acid rain, ozone layer depletion. Case Studies.
 - Environmental Acts and Policies (water, wildlife, biodiversity, air etc.)

Field Visits to Protected Areas, Visit to Research Organisation and Industries including Bird Watching Program/Biodiversity Observations

Recommended Books:

- Essential Environmental Studies by S P Misra & S. N Pandey (Anr Books Pvt. Ltd.)
- Environmental Studies by J P Sharma, Laxmi Publications,
- Paryavaran Adhayan (Hindi version) by Anubha Kaushik & C P Kaushik, New Age Publications
- Ecology & Environmental Biology by Ramdeo Misra, English Book Depot
- Environment and Ecology by R.Rajagopalan, OAK BRIDGE
- Ecology by Dr. Kailash Chaudhary & Dr. Ram Prakash Saran, IFAS Publications
- Fundamentals of Ecology by Eugene Pleasants Odum, CENGAGE Learning

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

Code- BVSAMJ-201 Credit-6

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- इत्संज्ञा तथा आत्मनेपद एवं परस्मैपद विषयक बोध प्रदान कराना ।
- नदी, घि, पद और भ संज्ञाओं का बोध कराकर सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में इन संज्ञाओं का क्रियान्वयन करना।
- कारक, निपात, उपसर्ग, गति और कर्मप्रवचनीय आदि संज्ञाओं का बोध कर उसमें प्रवीणता प्राप्त करना।

परिणामः

- आत्मनेपद व परस्मैपद का ज्ञान व प्रयोग करने में समर्थ होकर संस्कृत सम्भाषण में उन रूपों के प्रयोग में निपुणता प्राप्त कर लेता है।
- नदी व घि संज्ञा के प्रयोग देखकर शास्त्रों में शब्दों के यथार्थ स्वरूप को जानने में समर्थ हो जाते हैं।
- कारक प्रकरण के ज्ञान से संस्कृत संभाषण में प्रवीणता आती है।
- धातुओं का कण्ठस्थिकरण कर उनके प्रयोग से संस्कृत में सम्भाषण देकर भारतीयता का प्रचार कर समाज उन्नत बनाते हैं।
- भिन्न-भिन्न धातुओं का प्रयोग कर निबन्ध आदि लेखन में निपुणता आती है।

काशिकावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

इकाई-1 भूवादयोधातवः (1.3.1)-शदेः शितः(1.3.60) 20 घण्टे

धातुसंज्ञा, इत्संज्ञाप्रकरणम्, अनुदात्तादि आत्मनेपदप्रकरणम् ।

इकाई-2 म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च (1.3.61)-अन्तद्धौ येना..... (1.4.28) 20 घण्टे

शेषात्कर्त्तरि परस्मैपदम् प्रकरणम्, विप्रतिषेधः, नदीसंज्ञा, घिसंज्ञा, गुरुलघुसंज्ञे, ।

इकाई-3 आख्यातोपयोगे (1.4.29)-विरामोऽवसानम् (1.4.110) 20 घण्टे

कारकप्रकरणम्, हेतुसंज्ञा, निपात, गति, उपसर्ग, कर्मप्रवचनीय, तिङानां पुरुषनिर्धारणम्, संहिता, अवसान संज्ञा: ॥

इकाई-4 आख्यातिकः 15 घण्टे

भ्वादिर्गणः - भू सत्तयाम्, एध वृद्धौ, सेव् सेवन

अदादिर्गणः - अद, भक्षणे। हन, हिंसागत्योः। जागृ, निद्राक्षये। यु मिश्रणेऽमिश्रणे च। आङः शासु इच्छायाम्।

जुहोत्यादिर्गणः - हु दानादनयोः, आदानचेत्येके। डुदाञ् दाने। जिभी भये। ओहाक्, त्यागे।

दिवादिर्गणः - दिव्, क्रीडाविजी...। जृष वयोहानौ। शमु, उपशमे। रज्ज्, रागे।

इकाई-5 आख्यातिकः 15 घण्टे

स्वादिर्गण - पुञ् अभिषवे। तुदादिर्गणः - तुद, व्यथने। मृङ् प्राणत्यागे। मुच्चृ, मोचने। कृ, विक्षेपे।

रुधादिर्गणः - रुधिर, आवरणे। तनु, विस्तारे। डुकृञ्, करणे।

क्रयादिर्गणः - डुक्रीञ्, द्रव्यविनिमये। ज्ञा अवबोधने। चुरादिर्गणः - चुर स्तेये।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- आख्यातिकः श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती, प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
द्वितीयसत्रम्
द्वितीयपत्रम्- संस्कृतसाहित्यम्-II
Code-BVSAMN-202 Credit-4

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- काव्यदीपिका द्वारा काव्य के भेद, ध्वनि भेद, रस भेद के बोध से काव्य गुणों का विकास करना।
- रघुवंशम् के माध्यम से भगवान् राम व उनके वंशजों के बोध पूर्ण जीवन मूल्यों का ज्ञान करना।
- आयुर्वेद चरक संहिता के सद्वृत्त के माध्यम से सदगृहस्थ एवं विद्यार्थियों को करणीय अनुकरणीय विषयों का ज्ञान प्रदान करना।

परिणामः

- काव्य के भिन्न-भिन्न भेदों को तथा रसादि को पहचानने में कुशल हो जाता है।
- ब्रह्मतत्त्व के महत्व को समझकर समाज में ब्रह्मतत्त्व के प्रति जागृति का प्रसार करता है।
- सद्वृत्त के माध्यम से करणीय अकरणीय विषयों का विवेक रखते हुए स्वयं के एवं अन्य के जीवन को स्वस्थ एवं उन्नत बनाकर योगी, उपयोगी व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

इकाई-1 काव्यशास्त्रम्-(काव्यदीपिका शिखा ३)
काव्यध्वनिरसभेदाः ।

10 घण्टे

इकाई-2 गद्यम्- (राघुवंशम् - प्रथमसर्गः)
(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या
(ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

15 घण्टे

इकाई-3 उपनिषद् (केनोपनिषद्)

10 घण्टे

इन्द्रियाणां प्रेरकः कः?, जीवात्मा परमात्मनः अंशः, अस्मिन्नेव जन्मनि ब्रह्मतत्त्वज्ञानस्यावश्यकता इत्यादयः ।
(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-4 आयुर्वेदः- (चरकसंहिता सूत्रस्थानस्याष्टमोऽध्यायस्य स्वस्थवृत्तम्)

10 घण्टे

सद्वृत्तस्य लाभः, सद्वृत्तवर्णनम् (कर्तव्यनिर्देशः), सद्वृत्त (करणीय), सद्वृत्त (अकरणीय) इत्यादयः ।
(क) गद्यव्याख्या (ख) विषयात्मकप्रश्नाः

पाठ्यपुस्तकम्-

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
2. राघुवंशम् - प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
3. एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
4. चरकसंहिता- महर्षिचरकप्रतिसंस्कृता, प्रकाशकः- राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी, नई दिल्ली।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
द्वितीयसत्रम्
तृतीयपत्रम्- प्राचीन भारत का इतिहास
(BVSAID-203 (1) Credit-4

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः:-होरात्रयम्

Course Objective:

They will learn about the rise and expansion of the Gupta Empire in ancient India as well as how to establish regional kingdoms in various parts of India after the Empire fell. They can learn about early medieval India's society, economy, and culture. They can learn about the post-Mauryan political systems, particularly the Kushana and Satavahana ones; Gana-Sanghas, the Guptas' rise to power, the growth of the empire, art, architecture, literature, and so on They learn about how the agrarian economy, trade, and the urbanization of towns are changing.

Course Outcome:

Students will able to:

1. Understand the status of the society and culture of ancient India during the Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Harappa, and Bronze ages.
2. Identify Approaches towards the sources and the study of ancient Indian history.
3. Understand about India's Vedic and post-Vedic periods, as well as the rise of Jainism and Buddhism as religions and cultures in ancient India.
4. They will exchange ideas about how to separate the Magadha Empire from the other sixteen Janapadas.
5. Understand Great king Asoka's Dhamma and his inscriptions.

इकाई प्रथम- मौर्योत्तर राजवंशः शुंग वंश, कण्व वंश, सातवाहन वंशः गौतमीपुत्र शातकर्णी और यज्ञ श्री सातकर्णी, कलिंग नरेश खारवेल।

इकाई द्वितीय-विदेशी राजवंशः इंडो ग्रीकः डेमेट्रियस और मिनेंडर, शक क्षत्रपः मथुरा और पश्चिमी क्षत्रप और पहलव, कुषाण वंशः विम कडफिसस और कनिष्क।

इकाई तृतीय-गुप्त वंशः चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त, गुप्त काल की सांस्कृतिक उपलब्धि, गुप्त काल का पतनः गुप्त काल भारत का स्वर्ण काल।

इकाई चतुर्थ-भारत में हूणों का आक्रमण, वाकाटकः वाकाटक काल की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, बंगाल का शशांक, असम का भास्करवर्मन।

इकाई पञ्चम-मौर्योत्तर काल से गुप्त काल तक सांस्कृतिक विकास, सामाजिक, आलथक, धार्मिक स्थिति का विकास, नव भक्ति परंपराओं का उदयः शैववाद, वैष्णववाद, शक्तिवाद, हीनयान, महायान,श्वेतांबर और दिगंबर।

प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तक-शर्मा, एल0 पी0: प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022

सिंह, उपेन्द्रः प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाषाण काल से 12 वीं शताब्दि ई0 rd, Delhi 2016.

Recommended Readings:

Goyal, S.R., Magadh, Satavahan, Kushan Samrajyon ka Yug (Hindi), Jaipur

Narain, A.K., The Indo-Greeks, New Delhi, 1996.

V.S Agarwal, Indian Art, Varanasi, Prithvi Prakasahan, 1972.

Percy Brown, Indian Architecture, Bombay, D.B.Taraporevala Sons &Co, 1940

James Harle, The Art & Architecture of the Indian Subcontinent, Hormonds worth, Penguin, 1988

Sharma, R.S., Prarambhik Bharat ka Parichay, (Hindi) New Delhi 2017.

Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,

Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016

Basham A. L. The Wonder that was India,London

Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019

Jha D. N., Ancient India:In Historical Outline, 1997

1. " आयातित पाठ्यक्रम

अथवा
तृतीयपत्रम्- भारतीय समाज
Code- BVSAID-203 (2) Credit-4

प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संरचना होती है और प्रत्येक समाज के लिए कुछ संस्थाएं सार्वभौमिक होती हैं, अपनी कुछ विशिष्ट बातों के साथ वे प्रत्येक समाज में होती हैं। कुछ परिवर्तनीय कारक और प्रारम्भिक बिन्दु हैं जो समय के साथ समाज को बदलने में सक्षम बनाती हैं। समय चक्र भारतीय समाज की संरचना और परिवर्तनीय कारकों व परिवर्तनीय बिन्दुओं को संचालित करने वाली प्रक्रियाओं के साथ बदलते पहलुओं पर केंद्रित है।

उद्देश्य: भारतीय समाज पर इन दो पत्रों का अध्ययन करने के बाद, छात्र भारतीय समाज की मूल संरचना, इसकी ऐतिहासिक घटनाओं, समाज के आधारभूत दार्शनिक संस्थानों के बारे में एक धारणा प्राप्त कर सकता है। परिवर्तित होते संस्थानों, प्रक्रियाओं, कारकों और उन हस्तक्षेपों के बारे में जानें जो भारतीय समाज में परिवर्तन लाते हैं।

परिणाम: इस पत्र से एक छात्रों में भारतीय समाज के बारे में परिचित होने की आशा है। यह भारतीय समाज का एक व्यापक, एकीकृत और अनुभव आधारित रूपरेखा प्रस्तुत करेगा। यह आशा की जाती है कि समाज में संचालित संरचना और प्रक्रियाएं, इस पाठ्यक्रम में प्रस्तुत भारतीय समाज में सक्रिय परिवर्तनीय कारक भी छात्रों को अपनी स्थिति और क्षेत्र की बेहतर समझ हासिल करने में सक्षम बनाएंगे।

इकाई प्रथम- भारतीय समाज की संरचना और भारतीय समाज के अध्ययन के लिए दृष्टिकोण:

- 1.1 धार्मिक संरचना, भाषायी रचना और नस्लीय रचना
- 1.2 अनेकता में एकता
- 1.3 राष्ट्रीय एकता- अर्थ, खतरे (सांप्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रवाद)
- 1.4 भारतीय समाज के अध्ययन के दृष्टिकोण: संरचनात्मक-कार्यात्मक, मार्क्सवादी और अधिनस्थ

इकाई द्वितीय- हिंदू सामाजिक संगठन की ऐतिहासिक विशेषताएं और आधार

- 2.1 वर्ण व्यवस्था और प्रासंगिकता
- 2.2 आश्रम और प्रासंगिकता
- 2.3 पुरुषार्थ और आश्रमों के साथ संबंध
- 2.4 कर्म का सिद्धांत

इकाई तृतीय-भारत में विवाह और परिवार

- 3.1 हिंदू विवाह संस्कार के रूप में, हिंदू विवाह के उद्देश्य, हिंदू विवाह के रूप।
- 3.2 हिंदू संयुक्त परिवार-अर्थ और विघटन
- 3.3 मुसलमानों और जनजातियों के बीच विवाह
- 3.4 भारत में विवाह और परिवार में परिवर्तन

इकाई चतुर्थ-भारत में जाति व्यवस्था?

- 4.1 जाति का अर्थ, परिभाषाएं और विशेषताएं
- 4.2 जाति के कार्य और दुष्परिणाम
- 4.3 जाति व्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारक
- 4.4 जाति व्यवस्था में हाल के परिवर्तन

इकाई पञ्चम- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तक-राव, सी.एन. शंकर, भारतीय समाज का समाजशास्त्र, एस.चंद एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (संशोधित संस्करण), 2004.

अथवा
तृतीयपत्रम्- भारत का स्वतंत्रता संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत
Code- BVSAID-203 (3) Credit-4

उद्देश्य-

- 1857 की क्रान्ति का बोध कराना।
- बंगाल विभाजन व स्वदेशी आन्दोलन से अवगत कराना।
- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का बोध कराना।
- गांधीवादी युग से परिचय कराना।

परिणाम-

- 1857 की क्रान्ति के बोध से अन्याय व अधर्म के विरुद्ध आवाज उठाने की योग्यता जागृत हो जाती है।
- स्वदेशी आंदोलन के अध्ययन से स्वदेशी शिक्षा, चिकित्सा व पदार्थों का स्वयं उपयोग करते हुए दूसरों को भी उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है।
- क्रांतिकारी आंदोलनों के उद्भव के अध्ययन से अपने नीति, नियम, परम्परा, सभ्यता तथा संस्कृति के सत्याग्रही होकर समाज में व्याप्त कुरीतियों व अधर्मों का दमन व निर्मूलन करने की योग्यता जागृत हो जाती है।

इकाई प्रथम-1857 का क्रान्ति, 1857 के क्रान्ति कारण, क्रान्ति की प्रकृति और उसका प्रभाव, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885-1905) में गरमदल और नरमदल, राष्ट्रवाद का जन्म।

इकाई द्वितीय-बंगाल विभाजन, स्वदेशी आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलनों का उद्भव, भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों की मुख्य गतिविधियों के कारण, गदर पार्टी- गठन और गतिविधियाँ।

इकाई तृतीय-हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, सुभाष चंद्र बोस, आजाद हिंद फौज का गठन, होमरूल आंदोलन।

इकाई चतुर्थ-गांधीवादी युग, असहयोग आंदोलन, साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन, क्रिप्स मिशन (सांप्रदायिकता का उदय-माउंटबेटन की योजना और विभाजन), 1947 का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम।

इकाई पञ्चम-स्वातंत्र्योत्तर भारत, पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भ, 1962 और 1971 का युवा राष्ट्रीय दल- मार्क्सवादी, समाजवादी, राष्ट्रवादी और क्षेत्रीय दल, जेपी आंदोलन और आपातकाल।

- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तकें-

1. महाजन, बी.डी. आधुनिक भारतीय इतिहास, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022
2. चानरा, बी. इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022

सहायक ग्रन्थ-

1. रामकृष्ण मुखर्जी: ईस्ट इंडियन कंपनी का उदय और पतन
2. आर.सी. मजूमदार, एच.सी. रॉयचौधुरी और कलिकिंकर दत्ता: भारत का एक उन्नत इतिहास (हिंदी में: भारत का बृहद इतिहास)
3. एस.सी. सरकार और के.के. दत्ता: मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री, वॉल्यूम-2 (हिंदी में: आधुनिक भारत का इतिहास)
4. क्रिस्टोफर बेली: इंडियन सोसाइटी एंड द मेकिंग ऑफ ब्रिटिश एम्पायर एडवर्ड थॉम्पसन एंड जी.टी. गैरत: भारत में ब्रिटिश शासन का उदय और पतन।
5. टी.जी.पी.स्पीयर: द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया।
6. जी.एस.सरदेसाई: मराठों का नया इतिहास, (हिंदी में: मैराथन का नवीन इतिहास)
7. ए.आर. देसाई: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि हिंदी में: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक प्रतिष्ठा)
8. राम लखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास।
9. सत्य राव: भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद।
10. जी.एन. सिंह: भारतीय संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास में मील का पत्थर (हिंदी में भारत का संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास)
11. एससी सरकार: बंगाल पुनर्जागरण (हिंदी में: बंगाल का नवजागरण)।

अथवा
तृतीयपत्रम्- योगदर्शनम् (साधनपादः व्यासभाष्यसहितः)
BVSAID-203 (4) Credit-4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योग के मौलिक सिद्धान्तों क्रियायोग, क्लेश, हेय हेयहेतु हान हानोपाय एवं योग के बहिरङ्ग साधनो का परिचय कराना।
- योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहजता से हृदयङ्गम कराना।

परिणाम-

- योग के मौलिक सिद्धान्तों से अवगत होकर क्रियायोग आदि विविध साधनों को धारण करता हुआ उच्च जीवन मूल्यों को समाज में प्रसारित करता है।
- योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का ज्ञान प्राप्त कर अध्यापन करता हुआ अन्य योग जिज्ञासुओं को सन्तुष्ट करता है।

इकाई 1 - क्रियायोगः पञ्चक्लेशाश्च (सूत्र 1-9)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 2 - क्लेशाः क्लेशमूलककर्माशयश्च (सूत्र 10-15)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 3 - हेयः हेयहेतुः हानः हानोपायश्च (सूत्र 16-28)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

इकाई 4 - योगस्य बहिरङ्गसाधनानि (सूत्र 29-55)
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम्

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- योगदर्शन- स्वामी योगर्षि रामदेव, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित)
भोजवृत्ति-(महाराज भोजदेव)

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम्- Advanced English Communication
Code-BVSAAE-204 Credit-2

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

Objectives:

Unit1-Communicate easily with and enhance the ability to understand native speakers

Unit 2- Remove personal barriers and enhance confidence in a group setting and in work places

Unit3-Help translate L2 from L1 in a more efficient manner

(L1 is the mother tongue & L2 is the Official Language – here English)

Unit4 –Enhance formal and business writing skills

Course Specific Outcomes

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

Method of Teaching & Assessment-Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Unit-1:-Different types of Salutations,

Differences between formal and informal speech, between standard and Colloquial language

Unit-2:Verbal and Non-verbal Communication

- Personal–Social–Business
- Inter-personal and Group Communication
- Professional Communication

Unit3-Reading Comprehension

- Analysis and Interpretation
- Translation (from Indian Languages to English and vice-versa)
- Loud Reading, Drilling for pronunciation and fluency
- Listening Comprehension

Unit4-Writing Skills

- Report Writing
- Paraphrasing
- Professional Writing
- Argumentative Essays

Text books:

- English Grammar in Use, 4th Edition, Cambridge by Raymond Murphy
- Oxford Handbook for the Foundation Programme by Tim Raine & James Dawson & Stephan Sanders & Simon Eccles – eBook

Suggested Sources:

- learnenglish.britishcouncil.org
- learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone
- British Council e-Books for free - pdfdrive.com/british-council-books.html
- Check Your Vocabulary for English for the IELTS Examination –eBook

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
द्वितीयसत्रम्
पञ्चमपत्रम्- योगचिकित्सा-२
Code- BVSASE-205 (1) Credit-3

पूर्णाङ्काः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25
समयः- होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यो को भी रोजगार परख सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1-मिट्टी चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा

इकाई 2-जल चिकित्सा (हाइड्रोथैरेपी)

इकाई 3-मसाज के विविध प्रकार एवं प्रयोग

इकाई 4-प्राकृतिक चिकित्सा (नैचुरोपैथी)

इकाई 5-वैकल्पिक चिकित्सा एवं षट्कर्म

पाठ्यपुस्तकम्-

समग्र उपचार, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

अथवा

पञ्चमपत्रम्- भाषाविज्ञानं मनोविज्ञानं च

Code- BVSASE-205 (2) Credit-3

पाठ्यक्रम उद्देश्यः (Course Objective)

- अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्रा भाषा विषयकं तुलनात्मकं ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।
- भाषा विज्ञानस्य ज्ञानार्थं संस्कृत व्याकरणध्ययनम् आवश्यकं भवति तद् प्रयोजनमपि सेत्स्यति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति, तद् ज्ञानमपि प्राप्तुं छात्राः समर्थाः भविष्यन्ति।

पाठ्यक्रम परिणामः (Course Outcomes)

अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्रा

- भाषायाः उत्पत्तिं परिवारं निरूपयन्ति।
- भाषा विज्ञानस्य अर्थप्रयोजनपूर्वकं प्राचीनभाषाविज्ञानस्य निरूपणं संस्कृतव्याकरणादिना सह सम्बन्धनिरूपणम् च कुर्वन्ति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति तत् परिचयं च कुर्वन्ति।

इकाई 1- भाषायः परिभाषा, उत्पत्तिः, विकासश्च। भाषापरिवर्तनं तद्भेदाश्च। भाषापरिवर्तनस्य कारणानि। भाषापरिवारः। भारोपीयपरिवारस्य भाषागताः प्रमुखाः शाखाः तद्वैशिष्ट्यानि च। परिवारमूलकम् आकृतिमूलकं च भाषाणां वर्गीकरणम्। संस्कृतभाषा वैदिकी लौकिकी च। (8 घण्टे)

इकाई 2- अर्थ विज्ञानम् - अर्थ परिवर्तनस्य कारणानि दिशश्च (8 घण्टे)

इकाई 3- भाषाविज्ञानेतिहासः- प्राचीनः भाषावैज्ञानिकाः पाणिनिः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, यास्कः, भाषाविज्ञान-व्याकरण-निरूक्तानां परस्पर सम्बन्धः।

(8 घण्टे)

इकाई 4- Psychological testing and its application

General concept of Psychological testing: meaning and definitions, utility of psychological testing, types of psychological testing. Brief and general introduction of psychometric tests and psychological equipment.

Psychometric Tests

- Aggression Scale
- Self-Esteem
- Achievement Motivation
- Stress Scale
- Attitude Scale

- Emotional Competency
- Emotional maturity
- Mental Health Inventory
- Adjustment Inventory
- Judging Emotional Ability
- Adjustment Inventory

Psychological Equipment:

- Human Maze Learning Apparatus
- Finger Dexterity
- Tachistoscope
- Two Hand Co-ordination

Mirror Drawing Apparatus

संस्तुतग्रन्थाः-

1. भाषाविज्ञानम्- कर्णसिंहः।
2. सामान्य भाषा-विज्ञान-बाबूराम सक्सेना।
3. भाषा और भाषिकी, देवीशंकर द्विवेदी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी- (वरदराज), भैमीव्याख्या- व्याख्याकार भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

अथवा

पञ्चमपत्रम्- Intermediate Knowledge of Vocal & Instrumental

Code- BVSASE-205 (3) Credit-3

UNIT- I Merits & Demerits of Vocalist, Margi /Desi Sangeet , Brief Definition about Raag, five important Rules of Raag , Jaati of Raag & Knowledge of 10 Thaats its Basic Speciality, Brief intro of Mel raag.

UNIT- II Biography of Musicians- Bhimsen Joshi, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, Effect of Sound in our practical life, **Definitions:-** Gamaks-(Meed, kan, Khatka, Murki), Alankar no 5 to 10 (According to Bhatkhande Kramik pustak malika-1), AROH-AVROH-PAKAD-VADI-SAMVADI of Raag Yaman. Merits & Demerits of Musicians, Definition of following terms: Sum, Tali, Khali & Vibhag, Tuning of Tabla.

UNIT- III Practice of Previous Ten Alankar, Practice of Aroh , Avroh , Pakad in Raag Yaman & Lakshan Geet, Practice of two Bhajan/Geet/ghazal Based on Raag (Yaman/Bhairavi/Darbari-kanhda)

UNIT- IV Tabla- Playing Skill of Basic Bol (NA, TI Teen, Dha Dhi, Dheen) One Kayda In Teentaal.

Harmonium- Playing Skills of One (Bhajan, Patriotic Song)

अथवा
पञ्चमपत्रम्- गोविज्ञानम्
Code- BVSASE-205 (4) Credit-3

उद्देश्य:-

- गो सम्बन्धित साहित्यों से परिचय कराना।
- गो के विभिन्न देशी नस्लों से अवगत कराना।
- गो के सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व का बोध कराना।

इकाई 1-गो शब्द का अर्थ एवं पर्यावाची शब्द, गोवंश परिचय (नस्लें), देशी गोवंश तथा विदेशी गायों में अन्तर, गो का अन्य पशुओं से वैशिष्ट्य, गो माहात्म्य के विषय में महापुरुषों के विचार, प्राचीन काल में गो संवर्धन का स्वरूप तथा वर्तमान काल में गोसंवर्धन का स्वरूप, भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली गो नस्लें एवं पालन।

इकाई 2- संस्कृत वाङ्मय में गो का महत्त्व, वेदों के अनुसार गो महिमा, स्मृतियों, उपनिषदों आयुर्वेद ग्रन्थों, पुराणों, महाभारत, रामायण एवं अन्य ग्रन्थों के अनुसार गो महिमा।

इकाई 3- विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार- पञ्चगव्य का औषधीय प्रभाव एवं आरोग्यता-

1. गोदुग्ध
2. गोदधि
3. गोनवनीत तथा गोघृत
4. गोमूत्र
5. गोमय (गोबर), गोवर्ण एवं गो आयु का वैशिष्ट्य।
6. गोवंश सुधार की आवश्यकता, दुधारू तथा स्वस्थ गोवंश।

इकाई 4- गो मेध यज्ञ का वास्तविक स्वरूप, गोदान की परम्परा एवं गोपूजा का माहात्म्य, गो हत्या एवं मांस सेवन का निषेध, वर्तमान परिपेक्ष्य में गोसंवर्धन की आवश्यकता, लाभ एवं इसकी वैज्ञानिकता, गोसेवा द्वारा विभिन्न रोगों से मुक्ति पाप का क्षय पुण्य की प्राप्ति, उन्नत कृषि हेतु गो संरक्षण, जैविक खाद कीटनाशक के रूप में गोमूत्र का प्रयोग।

इकाई 5-सुन्दर समृद्ध आर्थिक आत्मनिर्भर व्यक्ति तथा समाज के लिये गो का महत्त्व, भारत वर्ष की प्रमुख गोशालाएं एवं गोधन, वर्तमानकाल में गोपालन की समस्या एवं समाधान, उन्नत बैल अथवा नन्दी का सदुपयोग, गो संवर्धन में योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज (पतञ्जलि योगपीठ) का योगदान, गोशालाओं की आत्मनिर्भरता के लिये गोमूत्र संयन्त्र तथा गोमय (गोमय) से बनी समिधा एवं अन्य वस्तुओं का निर्माण, गो आधारित प्रेरक कथाएं एवं सूक्तियां ।

परिणाम:-

- देशी गोवंश संरक्षण के प्रति सकारात्मक अभिरूचि का विकास होगा।
- गो को आर्थिक रूप से प्रयोग एवं विनियोग करने में सहायता प्राप्त होगी।

पाठ्यपुस्तकम्-

गोविज्ञानम्- Dr. Swami Parmarthdev, Divya Prakashan

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
द्वितीयसत्रम्
षष्ठपत्रम्- भारतीय संस्कृति बोध-II
Code- BVSAVA-206 (1) (Credit-3)

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य

- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित प्रसिद्ध मंत्रों का वाचन एवं परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक व श्वेताश्वतर के चयनित प्रसंगों से अवगत कराना।
- देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, प्रातः जागरण मंत्र, शयन मंत्रों को आत्मसाध् कराना।
- वर्णाश्रम व्यवस्था, पञ्चमहाव्रत, पञ्चमहाभूत, पञ्चप्राण से अवगत कराना।

इकाई 1- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित मंत्र।

इकाई 2- उपनिषद् (तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर) के चयनित प्रसंग।

इकाई 3- रामायण एवं महाभारत का चयनित प्रसंग एवं नवधा भक्ति का सामान्य परिचय।

इकाई 4- दैनिक दिनचर्या के विशेष मन्त्र, देवयज्ञः, जीवन दर्शन, पंचमहायज्ञ।

इकाई 5- महाभूत, पंचप्राण, वर्ण व्यवस्था, पंचकोश, पञ्च महाव्रत, अष्टाङ्गहृदय।

परिणाम

- उपर्युक्त चयनित मंत्रों को शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान में कुशल होना।
- उपरोक्त उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का विस्तृत ज्ञान अर्जित होना।
- पञ्चमहायज्ञों को अपने जीवन में विनियोग करने में समर्थ होना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकः- भारतीय संस्कृति बोध, प्रो० साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

अथवा

षष्ठपत्रम्- योगविज्ञानम् (प्रयोगात्मकम्)

Code- BVSAVA-206 (2) (Credit-3)

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, procedure and contraindications of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.

Unit I: Eight Baithak by Yogrishi Swami Ramdev ji (9 Hours)

Ardhbaithak, Purnabaithak, Rammurtibaithak, Pahalwani baithak-1, Pahalwanibaithak-II,
Hanuman baithak -1, Hanuman baithak-11,

Unit II: Twelve Dand by Yogrishi Swami Ramdev ji (9 Hours)

Simple Dand, RammurtiDand, VakshvikasakDand, Hanuman Dand, VrishchikDand-I,
VrishchikDand-II, Parshvadand, Chakradand, Palatdand, Sherdand, Sarpdand, Mishradand(mixed
Dand)

Unit III: Surya Namaskara &Yogasana (Supine lying postures) (9 Hours)

Suryanamaskar, Naukasana, Pavanamuktasana, Utthana-padasana, Padavrittasana,
Chakrikasana,Chakkichalana, ArdhaHalasana, Halasana, Setubandhasana, Sarvangasana,
Matsyasana,Chakrasana, Shavasana.

Unit IV: Pranayama (9 Hours)

NadiShodhana (Technique 1: Same Nostril Breathing), NadiShodhana (Technique 2: AlternateNostril
Breathing), NadiShodhana (Technique 3: Alternate Nostril Breathing +
Antarkumbhak);NadiShodhana (Puraka + AntarKumbhak + Rechaka + BahyaKumbhak) (1:4:2:2);

Unit V: Mudra & Shatkarmas (Only One kriya) (9 Hours)

Hasta Mudra: Chin, Jnana, Hridaya, Bhairav, Yoni, Pran, Apan, Apanvayu, Shankh,
Kamajayi,Shatkriya, Neti (Jalneti, Rubber Neti)

Continuous Evaluationby the Teachers

TEXT BOOKS

1. Balkrishna Acharya: (2015), DainikYogabhyasakram, DivyaPrakashan, Haridwar.
2. Randev Y.S. 2015: Dand-baithak, DivyaPrakashan, Haridwar
3. Saraswati S. S. (2006). Asana Pranayama and Mudra Bandha, "Yoga Publication Trust."
Munger,**Continuous Evaluationby the Teachers**

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
तृतीयसत्रम्
प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (द्वितीयोऽध्यायः)
Code- BVSAMJ-301 Credit-6

पूर्णाङ्काः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः:-25
समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- शास्त्र में पद विधि का बोध एवं सामान्य स्वर प्रकरण का ज्ञान कराना।
- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहिः और द्वन्द्व समास का पूर्व पर निपात पूर्वक बोध इत्यादि ।
- कारक विभक्तियों एवं उपपद विभक्तियों का बोध ।
- समास में एकवद् भाव एवं लिङ्ग बोध ।
- आर्धधातुकविषयक धात्वादेशो का बोध ।
- तद्राज संज्ञक प्रत्ययों, धातुओं एवं अव्ययों से विहित प्रत्ययो का लुक् इत्यादि ।

परिणामः

- सभी प्रकार के समास को पहचानने में समर्थ होते हैं तथा समस्त पदों का विग्रह करने में समर्थ होते हैं जिससे विद्यार्थी विविध शास्त्रों में उद्धृत संक्षिप्त व जटिल समस्त पदों को समझ पाते हैं।
- विभक्तियों के प्रयोग में तथा अन्य पुस्तकों में प्रदत्त उदाहरणों को देखकर उसका सूत्र बताने में समर्थ बनते हैं।
- समर्थ शब्द के साथ समर्थ विभक्ति का प्रयोग कर संस्कृत संभाषण में कुशल हो जाते हैं।
- परिभाषाओं के ज्ञापक का विश्लेषण करने में समर्थ होते हैं।
- परिभाषाओं को कण्ठस्थ कर सुनाने में तथा व्याकरण शास्त्र में प्रयोग करने में समर्थ होते हैं।

काशिकावृत्तिः (द्वितीयोऽध्यायः)

इकाई-1 समर्थः पदविधिः (2.1.1)-कुगति प्रादयः पर्यन्तम् (2.2.18) शास्त्रेय पदविधेयः बोधः, अव्ययीभावसमासः, तत्पुरुषसमासः ।	13 घण्टे
इकाई-2 उपपदमतिङ् (2.2.19)-चतुर्थी चाशिष्या... पर्यन्तम् (2.3.73) तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहिः द्वन्द्वसमासः, समासस्य पूर्वपरनिपातपूर्वकः, कारकविभक्त्योपपदविभक्त्योः बोध इत्यादि ।	14 घण्टे
इकाई-3 द्विगुरेकवचनम् (2.4.1)-लुटः प्रथमस्य..... (2.4.85) समासे एकवद्भावः लिङ्गबोधश्च आर्धधातुकविषयकः धात्वव्ययैः विहितानां प्रत्ययानां लुक् इत्यादयः ।	12 घण्टे
इकाई-4 पारिभाषिकः-(1-40)	11 घण्टे
इकाई-5 पारिभाषिकः- (41-80)	10 घण्टे

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- पारिभाषिकः-आचार्य प्रद्युम्न जी, प्रकाशक-ऋषि प्रिंटिंग प्रेस हरिद्वार ।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

तृतीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

Code-BVSAMJ-302 Credit-5

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- सनन्त, नामधातु, यङन्त, णिजन्त एवं अयादि धातुओं का बोध कराके संस्कृत पठन-पाठन में समर्थ बनाना।
- आख्यात में प्रयुक्त होने वाले विकरण प्रत्यय तथा धातु से प्रयुक्त कृत् एवं कृत्य प्रत्ययों का बोध एवं प्रयोग सिखाना।
- कर्म एवं सुबन्त उपपद रहते धातुओं से प्रत्यय विधान तथा भूत एवं वर्तमान काल में निर्दिष्ट प्रत्ययों का बोध करा शब्द निर्माण प्रक्रिया से अवगत कराना।

परिणामः

- वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त सनन्त, यङन्त, णिजन्त तथा नामधातु आदि के माध्यम से ज्ञानार्जन करके समाज में शास्त्र सम्मत दृष्टि प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप समाज में कर्तव्याकर्तव्य के बोध में निर्भान्त दृष्टि मिलती है।
- तिङन्त में प्रयुक्त होने वाले विकरणों को बताने में समर्थ होते हैं तथा आख्यात को देखकर विकरण निर्धारण में भी समर्थ हो जाते हैं और कृत तथा कृत्य प्रत्यय निष्ठ शब्दों के प्रयोग से संस्कृत तथा संस्कृति के प्रति लोगों को आकृष्ट करता है जिससे समाज संस्कारवान् व सम्पन्न होता है।
- कृत्य व कृत् प्रत्ययों के ज्ञान से वाक्य निर्माण में पटुता आती है और उपपद धातुओं तिङन्त तथा लकारों के सम्यक् तथा सम्पूर्ण अर्थबोध से शास्त्र एवं साहित्य के माध्यम से लोगों के मध्य में जागरूकता तथा समरसता का पथ प्रशस्त करता है।
- सम्भाषण में कृत्य व कृत् प्रत्ययों का प्रयोग कर सम्भाषण को उत्कृष्ट बनाते हैं।

काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)-

इकाई-1 प्रत्ययः (3.1.1)- कुषिरजोः प्राचांश्यन्..... पर्यन्तम् (3.1.90)

प्रत्ययः, परश्च, आद्युदात्तश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 धातोः(3.1.91)- आशिषि च पर्यन्तम् (3.1.150)

धातोः, तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्, कृदतिङ् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 कर्मण्यण् (3.2.1)- आत्माने खश्च... पर्यन्तम् (3.2.83)

कर्मण्यण्, ह्वावामश्च, आतोऽनुपसर्गे कः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 भूते (3.2.84)- पूड्यजो शानन् (3.2.128)

भूते, करणे यजः, कर्मणि हनः, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 ताच्छील्यवयो.....(3.2.129)- मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च (3.2.188)

ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्, इङ्धार्यो शत्रुकृच्छ्रिणि इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
तृतीयसत्रम्
तृतीयपत्रम्- संस्कृतिसाहित्यम्-III
Code- BVSAMN-303 Credit-4

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- काव्यगत भेदों एवं दोषों का सम्यक् बोध कराना।
- अर्थशास्त्रादि पठन से शुद्ध और प्रकृष्ट संस्कृत को अभ्यास राजर्षि व्यवहार
- आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति, इन्द्रिय जय (अरिषड्वर्ग) तथा राजर्षि व्यवहार का ज्ञान कराना।

परिणामः

- काव्य की आलोचनात्मक विवेचना एवं काव्य निर्माण के समय दोषों से बच सकता है।
- छन्दों के ज्ञान से विभिन्न छन्दों में श्लोक निर्माण करने में समर्थ हो जाता है।
- आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता दण्डनीति इत्यादि के सम्यक् बोध से तर्क विज्ञान, वेदविज्ञान, व्यापार विज्ञान एवं राजनीति ज्ञान से युक्त होकर मानव मूल्यों से युक्त समाज का निर्माण करता है।

(1) काव्यशास्त्रम् - (काव्यदीपिका शिखा 4, 5)

(2) गद्यम्- अर्थशास्त्रान्तर्गतं विनयाधिकरणम्

(क) गद्यसाहित्योद्भवपरिचयौ/ गद्यकृतपरिचयः

(ख) शब्दार्थः, शब्दालंकारः वाक्यान्वयः, अर्थालंकार/ व्यसनविषयकप्रश्नाः

(3) नाटकम्- शिशुपालवधः

(क) श्लोक व्याख्या/ गद्य व्याख्या

(ख) पात्रपरिचयः/ कविपरिचयः

(ग) चरित्रचित्रणम्/ अंकसारः

(4) छन्दांसि-

अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, मालिनी, शालिनी, शार्दूलविक्रीडित, पंचचामर, शिखरिणी, भुजंगप्रयात।

सहायकग्रन्थाः-

- काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
- कौटलीय अर्थशास्त्र-उदयवीर शास्त्री (व्याख्याकार)
मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास पब्लिकेशन नई दिल्ली
- शिशुपालवधः-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली।
- वृत्तरत्नाकर-चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
तृतीयसत्रम्
चतुर्थपत्रम्- स्वर्णकाल का इतिहास
Code- BVSAID-304 (1) Credit-2

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः:-होरात्रयम्

Course Objectives-

The main objective of this paper is to understand historical processes between 3rd Century AD and 6th Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3rd Century AD, an initial background is given starting from the post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

Unit I: Political History of Gupta Period

7 Hours

Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- ShriGupt and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

Unit II: Political History of Gupta Period

7 Hours

Achievements Chandrgupta Vikramaditya, Kumargupta and his successor- Skandgupta, Budhgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period, Officials of the Gupta empire.

Unit III: Religious Status in the Gupta Period

8 Hours

Vedic Religion- Surya, Indra, agni, Varun, Yam, Kubera, Tenacity and Sadhana, Life of Tapovan, Origin of Creation, Method of Yagya. public beliefs and rituals. **Puranic Religions: Shaivism:** Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalika Tradition, Kalmukh Tradition, Skand, Ganesh and Kartikey, Bhakti Tradition, **Vaishnavism:** Panchratra, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:** Trideviyan- Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

Unit IV: Literary and Creator

8 Hours

Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, Prayag Prashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature. Development of Prakrit literature, Apabhramsa literature and Tamil literature.

Course Outcome:

The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

Recommended Readings:

Pandey, V.C. Prachin Bharat ka Rajnitik Tatha Sanskritik Itihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,
Sharma, L.P.: History of Ancient India,
Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,
Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016
Basham A. L. The Wonder that was India, London

अथवा
चतुर्थपत्रम्- समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
Code:BVSAID-304 (2) Credit-2

उद्देश्य:

- सामाजिक परिवर्तन से अवगत कराना।
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों का बोध कराना।
- विकास के प्रारूप से अवगत कराना।
- भारत के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

परिणाम-

- सामाजिक परिवर्तन के बोध से सामाजिक विषमताओं को दूर करने में सक्षम हो जाता है।
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों के बोध से समाज के विकासपूर्वक अन्याय एवं अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने की योग्यता जागृत हो जाती है।
- विकास के प्रारूपों के अध्ययन से पूंजीवादी, समाजवादी व गांधीवादी विचारधाराओं के तुलनात्मक अनुशीलन से राष्ट्र में एकत्व, सह-अस्तित्व व विश्वबन्धुत्व की स्थापना करने में तत्पर हो जाता है।
- भारत के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के ज्ञान से अपनी संस्कृति के प्रति दृढ़ आस्था व विश्वासपूर्वक पुरातन व सनातन संस्कृति का अनुगामी बनकर विश्वकल्याण में प्रवृत्त हो जाता है।

सामाजिक परिवर्तन और विकास

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और प्रत्येक समाज परिवर्तन के अधीन है। सामाजिक परिवर्तन हमेशा समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक केंद्रीय सरोकार रहा है। परिवर्तन के भिन्न रूप होते हैं। परिवर्तन की अपनी पद्धति होती है जिसे विभिन्न सिद्धांतों द्वारा वर्णित किया जाता है। परिवर्तन अक्सर विभिन्न कारकों से प्रेरित होता है। यह प्रश्न-पत्र छात्र को ऐसी प्रक्रिया, सिद्धांतों और कारकों के बारे में कुछ विचार प्रदान करने के लिए निरूपित किया गया है।

इकाई प्रथम-सामाजिक परिवर्तन

- | | |
|--------------------------------------|--|
| 1.1 अर्थ और प्रकृति | 1.2 सामाजिक विकास और सामाजिक प्रगति: अर्थ और विशेषताएं |
| 1.3 सामाजिक विकास: अर्थ और विशेषताएं | 1.4 परिवर्तन के कारक: सांस्कृतिक, तकनीकी, जनसांख्यिकीय |

इकाई द्वितीय-सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत

- | | |
|------------------------|---------------------------|
| 2.1 विकासवादी सिद्धांत | 2.2 प्रकार्यवादी सिद्धांत |
| 2.3 संघर्ष सिद्धांत | 2.4 चक्रीय सिद्धांत |

इकाई तृतीय-विकास के प्रारूप

- | | |
|-----------------------------|---------------|
| 3.1 सामाजिक विकास के संकेतक | 3.2 पूंजीवादी |
| 3.3 समाजवादी | 3.4 गांधीवादी |

इकाई चतुर्थ-भारत के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं

- | | |
|-----------------|----------------------|
| 4.1 संस्कृतिकरण | 4.2 पश्चिमीकरण |
| 4.3 आधुनिकीकरण | 4.4 धर्मनिरपेक्षीकरण |

इकाई पञ्चम- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तकें-1. स्टीवन, वागो, सोशल चेंज, पियर्सन अप्रेंटिस हॉल, 2003 5वां रेव. एड।

संदर्भ ग्रन्थ-1. जयराम कंसल, सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट, विजडम प्रेस (आई.एस.बी.एन) (सी.बी.सी.एस), 2004

2. सिंह, वाई., भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण: सामाजिक परिवर्तन का एक व्यवस्थित अध्ययन, फरीदाबाद: थॉम्पसन प्रेस लिमिटेड, 1973

अथवा
चतुर्थपत्रम्- वैशेषिकदर्शनम् (प्रथमाध्यायः भाष्यसहितः)
Code:BVSAID-304 (3) Credit-2

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वैशेषिक दर्शन में निहित धर्म के स्वरूप, द्रव्यगुणकर्म के भेद, लक्षण व कार्यकारणभाव आदि का बोध कराना।
- वैशेषिक दर्शन के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज रीति से हृदयङ्गम कराना।

परिणाम-

1. वैशेषिक दर्शन में निहित धर्म का स्वरूप एवं द्रव्यगुणकर्म विषयक स्पष्ट बोध प्राप्त कर निर्भ्रान्त ज्ञान का प्रसार करता है।
2. वैशेषिक दर्शन के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का सहजरीति से ज्ञान कराकर योग्य विद्यार्थियों का निर्माण करता है।

इकाई -1 धर्मस्य स्वरूपं लक्षणं च (अध्याय-1 आहिनक-1 सुत्र 1-4)

इकाई -2 द्रव्यगुणकर्मणां भेदः, साधर्म्यवैधर्म्यः, लक्षणं च (अध्याय-1 आहिनक-1 सुत्र 5-17)

इकाई -3 द्रव्यगुणकर्मणां कार्यकारणभावः (अध्याय-1 आहिनक-1 सुत्र 18-31)

इकाई -4 सामान्य विशेषयोः लक्षणं भेदाश्च (अध्याय-1 आहिनक-2 सुत्र 1-17)

पाठ्यपुस्तकम् : -

वैशेषिक दर्शन (प्रशस्तपादभाष्य सहित) आनन्द प्रकाश।

प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.-रंगारेड्डि, तेलंगाना।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
तृतीयसत्रम्
पंचमपत्रम् - सरल मानक संस्कृतम्
Code- BVSAAE-305 Credit-2

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-हो

Course Objective:

The course will be able to,

Equip learners with the ability to engage in basic conversations in Sanskrit on everyday topics, such as greetings, introductions, and common social interactions.

Improve learners' ability to understand spoken Sanskrit in various conversational contexts.

Improve learners' ability to read, write and understand the basic Sanskrit writings.

इकाई प्रथम- भाषा परिचयः वाक्य रचना 1 (6 घण्टे)

संस्कृत भाषा पचिय, स्वपरिचय, सामान्यपदपरिचय (नामपदम्, क्रियापदम्) वर्तमानकाल (प्रथमपुरुष, एकवचनम्, बहुवचनम्, उत्तमपुरुष,द्विवचनम्) संख्या, भविष्यत्कालः, भूतकालः,कालपरिवर्तनम्, समयः, देहाङ्गानि

इकाई द्वितीय- वाक्यरचना 2 (6 घण्टे)

लिङ्गभेदः, विभक्तिभेदः, विशेषणम्, अव्ययम्, बन्धुवाचकाः, दिनचर्या, प्रसङ्ग-वाचनम् (गुरुशिष्यसम्भाषणम्, मित्रसम्भाषणम् आदि)

इकाई तृतीय- कथा-वाचनम् (6 घण्टे)

सरलसंस्कृतकथानां वाचनम्

इकाई चतुर्थ- संस्कृतलेखनम् 1 (6 घण्टे)

वेदवेदाङ्गानां महत्त्वम्, मुखं व्याकरणं स्मृतम्, उपनिषदां महत्त्वम्, भारतं पञ्चमो वेदः, पुराण लक्षणम् तेषां महत्त्वं च, संस्कृतभाषाया महत्त्वम्, संस्कृतस्य रक्षार्थं प्रसारार्थं चोपायाः

इकाई पञ्चम- संस्कृतलेखनम् 2 (6 घण्टे)

भारतीयदर्शनानां महत्त्वं वैशिष्ट्यं च, नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्, एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति, नास्ति योगसमं बलम्, ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या

निर्धारितग्रन्थाः

1. संस्कृतस्वाध्यायः-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, राष्ट्रिसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली

सन्दर्भग्रन्थाः

1. वाक्यव्यवहारावलिः-श्रीमद्दयानन्दकन्यागुरुकुलम्, चोटीपुर
2. संस्कृतनिबन्धशतकम्, लेखक- डॉ० कपिल द्विवेदी, प्रकाशन-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

Course Outcomes:

After completing the course, students will be able to,

Hold simple dialogues, ask and answer questions, and respond appropriately in social settings using basic Sanskrit vocabulary and sentence structures.

Comprehend and interpret short spoken passages, identify key information, and follow along with basic conversations in Sanskrit.

Write on various topics in simple Sanskrit.

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
तृतीयसत्रम्
षष्ठपत्रम् - सस्वरवेदपाठः
Code-BVSASE-306 (1) Credit-2

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदों का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होंगे।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत करना।
- अक्षरों(वर्णों) उच्चारण का सम्यक बोध करना।

ईकाई-१

- i.** वैदिक वाङ्मय परिचय
- ii.** वेदों के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।
- iii.** वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।
- iv.** वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत करना।
- v.** मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२

- i.** ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
- ii.** पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-३

- i.** पुरुष सूक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
- ii.** पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-४

- i.** कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।
- ii.** पुराने पाठ का आवृत्ति।
- iii.** मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।
- iv.** स्वस्तिवाचन शान्तिकरण एवं दिनचर्यामन्त्रों का सस्वर उच्चारण।
- v.** संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि, वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

अथवा

षष्ठपत्रम् - Advance Knowledge of Vocal & Instrumental

Code: BVSASE-306 (2) Credit-3

Objective -

- Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
- Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm. Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves. Practice to Sing five Bhajans.
- Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics. Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification. Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
- Study the lives and contributions of prominent musicians.

Unit I- Basic Theory of Primary Raag (Yaman and Bhairav), Writing Skills of Chota khayal in Teentaal in Raag Yaman, Importance of Taal in Music, Labeled Diagram of Tabla, Biography & Role in Tabla – Pt.Kishan Maharaj, Labeled Diagram of Tanpura, its role & Significance in music.

Unit II- Writing skill of one kaydas & One paltas each in Thah Laya in teentaal, Two Yog Geet .

Unit III- Practice of one Chota Khayal (Bandish) in Teentaal madhya laya with two Taan, Stage /Class Performance of One(Bhajan,Patriotic Song & Ghajal).

Unit IV- Tabla:- Bhajan Playing pattern on Tabla, One Palta in Teentaal. Ability to play Teentaal on Lehra .

Harmonium : Playing Skill of **Aroh Avroh Pakad** in Following Raag (Bhopali, Malkaush,Bhairavi), Practice of One (bhajan, Motivational Song), playing skill of Alankar 1 to 10 (According to kramik pustak malika-1)

Outcomes-

5. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
6. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music. They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
7. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
8. Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

Recommended Books:-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part – 1- Rajkishor Prasad Sinha (Author)
2. Raag parichaya Part – 1 to 4 – Harishchandra Srivastava (Author)
3. Sangeet Prasnottar Part – 1
4. Taal Parichaya – All parts – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Table Prashnotari Part – 1 – Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part – All Parts – V.N. Bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya – Ragmani

अथवा
षष्ठपत्रम्- यज्ञविज्ञानम्
Code- BVSASE-306 (3) Credit-3

उद्देश्यः-

- यज्ञ के स्वरूप एवं उसके ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराना।
- यज्ञ के व्यावहारिक वैज्ञानिक एवं परमार्थिक पक्षों का ज्ञान कराना।
- यज्ञ के महत्व का बोध कराना।

इकाई 1- यज्ञ शब्द का परिचय (निर्वचन व परिभाषा), शास्त्रीय प्रमाण व महत्व आदि।	9 घण्टे
इकाई 2-यज्ञ के प्रकार, पञ्चमहायज्ञों का परिचय , देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञादि के मन्त्रों की व्याख्या, यज्ञ सामग्री, समिधा आदि का परिचय।	9 घण्टे
इकाई 3- शास्त्रों में वर्णित यज्ञ के अन्य प्रकार व महत्व, यज्ञ का व्यावहारिक पक्ष ।	9 घण्टे
इकाई 4-यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण, यज्ञचिकित्सा शोध कार्य ग्लोबल वार्मिंग समस्या का समाधान।	9 घण्टे
इकाई 5-यज्ञ का रोगों पर प्रभाव, यज्ञ एवं योग का प्रभाव।	9 घण्टे

परिणामः-

- यज्ञ से सामान्य रूप से रोगों के निदान में समर्थता प्राप्त होगी।
- यज्ञ एवं योग को समग्र चिकित्सा के रूप में उपयोग एवं विनियोग करने में कुशल होंगे।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकः-

श्रौत यज्ञों का संक्षिप्त परिचय। लेखक-पं. युधिष्ठिर मीमांसक

यज्ञ योग आयुर्वेद चिकित्सा। लेखक-प.पू.स्वामी रामदेव जी महाराज प्रकाशन-दिव्ययोग प्रकाशन।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

चतुर्थसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायतृतीयपादः)

Code- BVSAMJ-401 Credit- 5

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- उणादि तथा कर्ताभिन्नकारक संज्ञा भाव में विहित प्रत्ययों एवं खलर्थ प्रत्ययों का बोध ।
- कालातिदेश में विहित प्रत्यय लिङ् लोट् एवं तुमुन् आदि प्रत्ययों के प्रयोग कराना।

परिणामः

- उणादि शब्दों की सिद्धि एवं प्रकृति प्रत्यय विभाग को बताने में प्रवीणता आती है। औपदिक शब्दप्रक्रिया जन्य शब्दों के ज्ञान से लौकिक तथा वैदिक शब्दों के शाश्वत शब्दार्थ सम्बन्ध को स्थिरता प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप शास्त्र एवं समाज में विकृतियों का प्रादुर्भाव नहीं होता है।
- कृत् प्रत्यय के प्रयोग से वाक्य प्रयोग में प्रवीणता आती है व अन्य ग्रन्थों में पहचानने में समर्थ होते हैं।
- किस कारक में कौन सा प्रत्यय होता है इसका परिचय देने में पारंगत होते हैं प्रत्ययों के अर्थ काल आदि के सम्यक् ज्ञान से लुप्त प्रायः शास्त्रों का जीर्णोद्धार करना व मानवता के लिए हितकारी सिद्धान्त व तत्त्वों की पुनर्स्थापना करता है।
- अव्युत्पन्न शब्दों के बोधन में समर्थ होते हैं एवं शब्दों के वाक्यगत अर्थ तथा वाक्य निर्माणशैली के बोध से शब्दार्थ शक्ति तथा वाक्यार्थ शक्ति का विशिष्ट ज्ञान होता है जिससे विद्यार्थी लोक में शास्त्र सम्बन्धी द्वन्द्व को नष्ट करके शास्त्रों की यथार्थता को प्रकाशित करता है।

काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायतृतीयपादः)

इकाई-1 उणादयो बहुलम् (3.3.1)- कर्मण्यधिकरणे च पर्यन्तम् (3.3.93)

उणादयो बहुलम्, भूतेऽपि दृश्यन्ते, भविष्यति गम्यादयः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 स्त्रियां क्तिन् (3.3.94)- आशांसावचने लिङ् (3.3.134)

स्त्रियां क्तिन् , स्थागापापचो भावे, मन्त्रे वृषेपचमनविदभूवीरा उदात्तः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 नानद्यतनवत्.....(3.3.135)- स्मोत्तरे लङ् च... पर्यन्तम् (3.3.176)

नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः, भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 उणादिकोषः (1-3 पाद)

कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्, छन्दसीणः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 उणादिकोषः (4-5 पाद)

वातप्रमीः, ऋतन्यज्जिवन्यज्यर्पिमद्य..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- उणादिकोषः- श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वतीव्याख्यासहितः, प्रकाशक-रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
चतुर्थसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायचतुर्थपादः)
Code- BVSAMJ-402 Credit-5

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- क्त्वा और णमुल् प्रत्यय विषयक बोध तथा अन्य विधि सूत्रों से अवगत कराना।
- पाणिनीय कृतलिङ्गानुशासनम् ग्रन्थ के द्वारा शब्दों के लिङ्गों का बोध करा संस्कृत संभाषण व लेखन में समर्थ बनाना।
- फिट्सूत्र ग्रन्थ के माध्यम से स्वर विषयक ज्ञान प्रदान करना।

परिणामः

- क्त्वा और णमुलादि प्रत्ययों के ज्ञान से वाक्य प्रयोग में कुशल बनते हैं।
- वाक्य संरचना में अति महत्वपूर्ण शब्दों के लिङ्ग का विशिष्ट बोध कराने में समर्थ होते हैं।
- शब्दों की स्वर सिद्धि में पारंगता आती है।
- प्रत्ययों के कारक निर्धारण व बताने में निपुण हो जाते हैं।

काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायचतुर्थपादः)

इकाई-1 धातुसम्बन्धे.... (3.4.1)- प्रयाप्तवचने..... पर्यन्तम् (3.4.66)

धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः, क्रियासमभिव्यक्ति लोट् लोटो..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 कर्तरि कृत् (3.4.67)- छन्दस्युभयथा पर्यन्तम् (3.4.117)

कर्तरि कृत् , भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीय.... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 लिङ्गानुशासनम् (स्त्रीलिङ्गाधिकारः, पुल्लिङ्गाधिकारः)

लिङ्गम्, स्त्री, ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृया..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) ससूत्रलिङ्गज्ञापनम्

इकाई-4 लिङ्गानुशासनम् (नपुंसकलिङ्गाधिकारः, विशिष्टलिङ्गाधिकारः)

नपुंसकम्, भावे ल्युडन्तः, निष्ठा च इत्यादीनि सूत्राणि ।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) ससूत्रलिङ्गज्ञापनम्

इकाई-5 फिट्सूत्राणि

फिषोऽन्त उदात्तः, पाटलापालङ्काम्बासागरार्थानाम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) अर्थोदाहरणे (ग) स्वरज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49। ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- लिङ्गानुशासनम्:-पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।
- फिट्सूत्रम्-पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
चतुर्थसत्रम्

तृतीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (चतुर्थोध्यायः)
Code- BVSAMN-403 Credit-6

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति तथा स्त्रीप्रत्ययों का बोध ।
- तद्धित के अधिकार में अपत्यार्थ, चातुरार्थक, शैषिकार्थक तथा अन्य प्रत्ययों का बोध ।

परिणामः

- तद्धित प्रत्यय व उनकी प्रकृति को भिन्न-भिन्न पहचानने में दक्ष होते हैं।
- तद्धितान्त प्रत्ययों के प्रयोग से विशिष्ट सम्भाषण करने में समर्थ होते हैं।
- स्त्री प्रत्ययों के ज्ञान से लिंगों को पहचानने में निपुणता आती है।

काशिकावृत्तिः (चतुर्थोध्यायः)

इकाई-1 ड्याप्रातिपादिकात् (4.1.1)- आवट्याच्च पर्यन्तम् (4.1.75)

ड्याप्रातिपादिकात्, स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 तद्धिताः (4.1.76)- न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः (4.1.178)

तद्धिताः, यूनस्तिः अणिजोरनार्षयोर्गुरुपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 तेन रक्तं रागात् (4.2.1)- कृकण पर्णाद् भारद्वाजे (4.2.145)

तेन रक्तं रागात्, लाक्षारोचनाद् ठक्, नक्षत्रेण युक्तः कालः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां.....(4.3.1)-कशीयपरशव्य.....(4.3.168)

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च, तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 प्राग्वहतेष्टक् (4.4.1)- भावे च (4.4.144)

प्राग्वहतेष्टक्, तेन दीव्यति खनति जयति जितम्, इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
चतुर्थसत्रम्
चतुर्थपत्रम्- वैदिकसाहित्यं दर्शनपरिचयश्च-I
Code-BVSAMN-404 Credit-4

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्यः

- प्रस्तुत वेदांश का स्मरण कराते हुए ज्ञान एवं इन्द्र की महिमा से परिचय कराना ।
- तर्कसंग्रह के माध्यम से न्याय एवं वैशेषिक दर्शन को समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
- प्रश्नोपनिषद् के द्वारा ब्रह्म और सृष्टिक्रम का बोध कराना।
- मनुस्मृति के पठन से धर्म, तप, विद्याभ्यास और इन्द्रियसंयम के प्रति जागृति उत्पन्न कराना ।

परिणाम-

- तर्क के सामर्थ्य से सूक्ष्मतत्वों को समझने का सामर्थ्य आ जाता है ।
- उपनिषद् के तत्वों से अवगत हो कर उचित दृष्टि का विस्तार करता है ।
- उद्देश्य में उक्त तत्वों से युक्त होकर समाज में तद्विषयक ज्ञान के विस्तार से दिव्य व भव्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

- | | | |
|-------|---|----|
| (1) | काव्यशास्त्रम् (काव्यदीपिका - शिखा - 6-7) | 12 |
| (2) | वेद :- (ऋग्वेदः ज्ञानसूक्तम् इन्द्रसूक्तम्) | 12 |
| | (क) मन्त्रकण्ठस्थीकरणम् | |
| | (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम् | |
| | (ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम् | |
| (3) | दर्शनम् :- (तर्कसंग्रहः) | 12 |
| | (क) विषयात्मकप्रश्नाः | |
| (4) | उपनिषद् (प्रश्नोपनिषद्) | 12 |
| | (क) कण्ठस्थीकरणम् | |
| | (ख) विषयात्मकप्रश्नाः | |
| (5) | अन्यधार्मिकग्रन्थाः -(मनुस्मृतिः - अध्याय - 12) | 12 |
| | (क) श्लोकपूर्तिः | |
| | (ख) पदपदार्थज्ञापनम् | |

पाठ्यपुस्तकम्-

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
2. ऋग्वेदः - प्रकाशकः - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. तर्कसंग्रहः -प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. ईशादि नौ उपनिषद् प्रकाशकः - आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट- 455, खारी बावली, दिल्ली।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
चतुर्थसत्रम्
पंचमपत्रम्-Communication Technology
Code-BVSAAE-405 (1) Credit-2

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Objectives

The course helps the participants to,

- Understand the concept and purpose of Communication Technology
- Communicate with email by their own
- Join and organize online academic events
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources to develop intelligence

Unit I	Introduction to Communication technology Definition, Types, Purpose and Input methods for Indian Languages/Scripts	(10 hours)
Unit II	Email Communication Gmail and Zimbra – How to create and use	(4 hours)
Unit III	Web Conference and Tools Google Meet, Google Classroom, Zoom – including live streaming	(6 hours)
Unit IV	Internet Search Google, YouTube, Blog	(10 hours)
Unit IV	E-Resources E-Dictionaries, E-Books, E-Learning, Wiki for Indian Languages	(10 hours)

Outcomes

After completing the course, the learners will be able to

- Type Indian Script/s by using various Input methods
- Send and arrange emails
- Schedule and/or Join web conferences
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources

अथवा
**पंचमपत्रम्- Introduction to Journalism &
 Mass Communication
 Code-BVSAAE-405 (2) Credit-2**

पूर्णाङ्कः:-50
 बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-35
 आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-15
 समयः-होरात्रयम्

Course Objectives

- To introduce students to the concepts, processes, and importance of journalism and mass communication.
- To explore the historical evolution and functions of media in society.
- To familiarize students with communication models and theories.
- To develop an understanding of media ethics and laws.
- To provide practical insights into basic content creation for media platforms.

Course Outcomes (COs)

By the end of this course, students will be able to:

- CO1: Describe the basic concepts and processes of communication.
- CO2: Identify the historical development and role of journalism in society.
- CO3: Analyse various models and theories of communication.
- CO4: Examine the ethical and legal frameworks of media practices.
- CO5: Demonstrate basic skills in content creation and media platform usage.

Unit	Course Outline	CO Mapping	Bloom's Taxonomy Level
1	Basics of Communication (6 Hours) : Definition, Elements, and Process of Communication; Ancient Indian concept of communication –oral tradition, use of cave art, bhoja-patras, rock edicts and pillars for communication, samvad, story-telling, folk, drama, art of communication in Natyashastra, sadharanikaran. Types of Communication: Intrapersonal, Interpersonal, Group, Mass Communication; Functions of Communication: Informing, Persuading, Entertaining; Barriers to Communication	CO1,CO3	K1, K4
2	Introduction to Journalism (6 Hours): Definition, Scope, and Importance of Journalism; Historical Overview of Journalism in India; Principles of Journalism: Accuracy, Objectivity, Fairness; Role of Journalism in Democracy	CO2	K2
3	Mass Communication (6 Hours): Definition and Characteristics of Mass Media; Types of Mass Media: Print, Broadcast, Digital; Media Convergence and New Media Technologies; Social, Cultural, and Political Impact of Media	CO2,CO3	K2, K4
4	Media Ethics and Laws (6 Hours): Introduction to Media Laws: Defamation, Copyright, Contempt of Court; Ethical Challenges in Journalism and Media; Freedom of Press in India; Media Literacy and Responsible Journalism	CO4	K3, K5
5	Hands-on Learning Insights (6 Hours): Basics of News Writing: 5Ws and 1H; Crafting Headlines and Leads; Introduction to Digital Media Platforms:	CO5	K3, K6

	Blogging, Podcasting, Social Media; Group Discussions on Emerging Media Trends		
Bloom's Taxonomy Level: K1-Remember, K2- Understand, K3- Applying, K4- Analyze, K5- Evaluate, K6-Create			

Assignments:

Assignment 1: Write a report on the role of journalism in democracy, with examples from Indian and global media practices. (500 words)

Assignment 2: Create a blog post on an emerging trend in digital media, such as podcasting or citizen journalism. (500 words)

Suggestive Readings:

- Baran, S. J. (2020). Introduction to Mass Communication: Media Literacy and Culture (10th ed.). McGraw-Hill Education.
- Dominick, J. R. (2012). The Dynamics of Mass Communication: Media in the Digital Age (12th ed.). McGraw-Hill.
- Kumar, K. J. (2020). Mass Communication in India (5th ed.). Jaico Publishing House.
- McQuail, D. (2010). McQuail's Mass Communication Theory (6th ed.). Sage Publications.
- Natarajan, J. (1955). History of Indian Journalism. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, India.
- Ravindran, R. K. (1999). Handbook of Radio, Television, and Broadcast Journalism. Anmol Publications.
- पांडे, स. के. (2018). जनसंचार और पत्रकारिता का परिचय. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन पब्लिकेशन।
- गुप्ता, एस. (2020). जनसंचार माध्यम और सिद्धांत. दिल्ली: समीर प्रकाशन।
- शर्मा, विकास. (2019). पत्रकारिता के सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- त्रिपाठी, राकेश कुमार. (2016). समाचार लेखन और संपादन. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- प्रसाद, महेंद्र (2015). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास. पटना: प्राची प्रकाशन।
- मिश्रा, उमेश. (2021). जनसंचार माध्यमों की भूमिका. भोपाल: साहित्य प्रकाशन।
- द्विवेदी, रामेश्वर. (2017). पत्रकारिता और लोकतंत्र. लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पञ्चमसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (पञ्चमोऽध्यायः)

Code- BVSAMJ-501 Credit-5

पूर्णाङ्कः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- तद्धित के अधिकार में भाव एवं कर्म में विहित त्वत् आदि प्रत्ययों का बोध कराना ।
- संख्या वाचियों से पूरण अर्थ में विहित, मतुप् अर्थों में विहित तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध कराना ।
- विभक्ति संज्ञक, आतिशायिक, स्वार्थिक, समासान्त तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध कराना ।

परिणामः

- भाषा में भाव प्रत्ययों का प्रयोग कर शब्दों की निष्पत्ति करके उनका प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं।
- संख्यावाची और मतुबादि अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध पूर्वक प्रयोग में समर्थ होते हैं।
- अतिशायिक प्रत्ययों के साथ वाक्य प्रयोग में प्रवीणता प्राप्त कर एक उच्चस्तरीय संस्कृत लेखन में समर्थ हो जाते हैं।
- साहित्य में प्रयुक्त तद्धितान्तों को पहचानकर तद्धितान्तों के सही अर्थों की संगति करने में समर्थ होते हैं।
-

काशिकावृत्तिः (पञ्चमोऽध्यायः)

इकाई-1 प्राक् क्रीताच्छः (5.1.1)- ब्रह्मणस्त्वः (5.1.136)

प्राक् क्रीताच्छः, उगवादिभ्यो यत् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 धान्यानां भवने.... (5.2.1)- अहंशुभमोर्युम् (5.2.140)

धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्, ब्रीहिशाल्योर्ढक् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 प्राग् दिशो विभक्तिः (5.3.1)- ज्यादयस्तद्राजाः (5.3.119)

प्राग् दिशो विभक्तिः, किंसर्वनामबहुभ्योऽद्वयादिभ्यः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 पादशतस्य..... (5.4.1)-मद्रात् परिवापणे (5.4.67)

पादशतस्य सङ्ख्यादेवर्वीप्सायां वुन् लोपश्च, दण्डव्यवसर्गयोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 समासान्ताः (5.4.68)-निष्प्रवाणिश्च (5.4.160)

समासान्ताः, न पूजनात्, किमः क्षेपे इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पञ्चमसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायप्रथमपादः)

Code- BVSAMJ-502 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- धातु को द्वित्व, सम्प्रसारण, आकारादेश एवं संहिता के अधिकार में विहित सन्धि एवं अन्य कार्यों का बोध कराना।
- सन्धियों का बोध कराके संस्कृत को सन्धिविच्छेदपूर्वक पढ़ने में समर्थ बनाना।

परिणामः

- द्वित्व और सम्प्रसारणादि कार्यों से सम्बद्ध सिद्धियों को करने में प्रवीण होते हैं।
- सन्धियों के ज्ञान से अन्य पुस्तकों के पठन-पाठन में सरलता व सहजता आती है।
- शब्दों के स्वर निर्देश में पारंगत होकर वेदादि शास्त्रों को पढ़ने में निपुण हो जाते हैं।
- स्वर भिन्नता से अर्थ परिवर्तन को समझा पाते हैं।

काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायप्रथमपादः)

इकाई-1 एकाचो द्वे..... (6.1.1)- विभाषा परे (6.1.44)

एकाचो द्वे प्रथमस्य, अजादेद्वितीयस्य, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 आदेच उपदेशोऽशिति (6.1.45)- औतोऽम्शासोः (6.1.94)

आदेच उपदेशोऽशिति, न व्यो लिटि, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 एङि पररूपम् (6.1.95)- पारस्कर प्रभृतीनि च..... (6.1.157)

एङि पररूपम्, ओमाडोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 अनुदात्तं..... (6.1.158)- नृ चान्यतरस्याम् (6.1.184)

अनुदात्तं पदमेकवर्जम्, कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 तित् स्वरितम् (6.1.185)- समासस्य (6.1.223)

तित् स्वरितम्, तास्यनुदात्तेन्डिददुपदेशाल्ल..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पञ्चमसत्रम्

तृतीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ)

Code- BVSAMJ-503 Credit-5

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- उदात्त स्वरित एवं अनुदात्त स्वर सम्बन्धि बोध व प्रयोग में समर्थ बनाना।
- उत्तरपद के रहते अलुग् तथा अन्य कार्यो का बोध करना व प्रयोगों का सिखाना।

परिणामः

- स्वर कार्यो का ज्ञान होता है तथा स्वयं स्वर निर्देशन में कुशल हो जाते हैं।
- विभिन्न शास्त्रों में प्रदत्त मन्त्रों की स्वर सम्बन्धी त्रुटियों को पहचान कर स्वयं शोधन कर पाता है शास्त्र परंपरा को अक्षुण्ण रख पाते हैं।
- उदात्त अनुदात्त आदि स्वरों के परिवर्तन से होने वाले अर्थ परिवर्तन को समझकर संस्कृत निहितार्थ का बोध कर सकेंगे।

काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ)

इकाई-1 बहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्वपदम् (6.2.1)- निष्ठोपसर्गपूर्व... (6.2.110)

बहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्वपदम्, तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्यय... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 उत्तरपदादिः (6.2.111)- परादिश्छन्दसि बहुलम् (6.2.199)

उत्तरपदादिः, कर्णो वर्णलक्षणात्, संज्ञौपम्ययोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 अलुगुत्तरपदे (6.3.1)- पितरामातरा चच्छन्दसि (6.3.33)

अलुगुत्तरपदे, पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः, ओजः सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 स्त्रियाः.... (6.3.34)-नगोप्राणिष्वन्यतरस्याम् (6.3.77)

स्त्रियाः पुवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 सहस्य सः..... (6.3.78)-सम्प्रसारणस्य (6.3.139)

सहस्य सः संज्ञायाम्, ग्रन्थान्ताधिके च, द्वितीये चानुपाख्ये इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
पञ्चमसत्रम्
चतुर्थपत्रम् - वैदिकसाहित्यं दर्शनपरिचयश्च-II
Code-BVSAMN-504 Credit-4

पूर्णाङ्कः:-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25
समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वेदों में निहित गूढतत्त्वों से अवगत कराना।
- सांख्य के मूलभूत सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- तैत्तिरीयोपनिषद् में प्रोक्त शिक्षावल्ली के माध्यम से शिक्षा के मूलभूत तत्त्वों से अवगत कराना।

परिणाम-

- वेदनिहिततत्त्वों से अवगत होकर समाज में तद्विषयक ज्ञान का विस्तार करता है ।
- सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों से अवगत होकर स्वयं को एवं समाज को सांख्य के प्रकाश से प्रकाशित करता है।
- शिक्षा के मौलिक तत्त्वों से जीवन का युक्त करके समाज में शिक्षा के स्वरूप को प्रकाशित करना ।

- (1) वेद :- (अथर्ववेदः - पृथिवीसूक्तम्) 20
(क) मन्त्रकण्ठस्थीकरणम्
(ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्
(ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम्
- (2) दर्शनम् :- (सांख्यकारिका) 20
(क) कण्ठस्थीकरणम्
(ख) अर्थबोधनम्
(ग) विषयात्मकप्रश्नाः
- (3) उपनिषद् - (तैत्तिरीयोपनिषद्) 15
(क) कण्ठस्थीकरणम्
(ख) विषयात्मकप्रश्नाः
- (4) अन्यधार्मिकग्रन्थाः -नीतिशतकम् 15
(क) श्लोककण्ठस्थीकरणम्
(ख) पदपदार्थज्ञापनम्

सहायकग्रन्थाः -

1. अथर्ववेदः - प्रकाशकः - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, राजस्थान।
2. सांख्यकारिका-प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
4. नीतिशतकम् -प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पञ्चमसत्रम्

चतुर्थपत्रम् -Yog Ayurved & Naturopathy (Internship)

Code-BVSASE-505 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवानिष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यो को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

प्रथम इकाई- पञ्चकर्म- परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार

(1) वमन (2) विरेचन (3) नस्य (4) बस्ति (5) रक्तमोक्षण

अभ्यंग, शिरोधारा, आन्तरिक बस्ति, बाह्य बस्ति, अक्षितर्पण, नस्य, रक्तमोक्षण श्रृंगी, वातमोक्षण, स्नेहन, स्वेदन।

द्वितीय इकाई- षट्कर्म-परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार

(1) जलनेति (2) रबरनेति (3) कुंजल क्रिया (4) त्राटक (5) शंखप्रक्षालन

तृतीय इकाई- एक्यूप्रेशर

- 1) परिचय, रोगानुसार, चिकित्सीय लाभ
- 2) हस्त एवं पैर के विभिन्न मर्म स्थानों के द्वारा चिकित्सा

चतुर्थ इकाई- प्राकृतिक चिकित्सा-सामान्य परिचय एवं रोगानुसार चिकित्सीय लाभ

(1) मिट्टी चिकित्सा (2) जल चिकित्सा (3) सूर्य चिकित्सा (4) आहार चिकित्सा
(5) आकाश चिकित्सा (उपवास) (6) प्राण चिकित्सा (वायु)

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

षष्ठसत्रम्

प्रथमपत्रम् - काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायचतुर्थपादः)

Code- BVSAMJ-601 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- अङ्ग के अधिकार में निर्दिष्ट दीर्घ, असिद्धवत् आर्धधातुक विषयक तथा भसंज्ञा सम्बन्धि कार्यों का बोध।

परिणामः

- शास्त्रों में प्रयुक्त होने वाले क्लिष्ट शब्दों का प्रकृति प्रत्यय विभागपूर्वक अर्थों का बोधन कर प्राचीन शास्त्रों के संरक्षण व सम्बर्धन में सहायक होते हैं।
- धातुरूपों में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों का बोध कर शब्दवैविध्य तथा अर्थवैचित्र्य के माध्यम से शास्त्रों का सत्यार्थ प्रदान करता है।

काशिकावृत्तिः (षष्ठाऽध्यायचतुर्थपादः)

इकाई-1 अडस्य (6.4.1)- हन्तेर्जः (6.4.36)

अडस्य, हलः, नामि, नसृचतसृ इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 अनुदात्तोपदेश.....(6.4.37)- मयतेरिदन्य..... (6.4.70)

अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिक लोपो झलि किङिति इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 लुङ्लड्लुङ्लक्ष्वडुदात्तः (6.4.71)- अङितश्च (6.4.103)

लुङ्लड्लुङ्लक्ष्वडुदात्तः, आडजादीनाम्, छन्दस्यपि दृश्यते इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 चिणो लुक् (6.4.104)-अर्वणस्त्रसावनजः (6.4.127)

चिणो लुक्, अतो हेः, उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 मघवा बहुलम् (6.4.128)-ऋत्व्यवास्त्व्य..... (6.4.175)

मघवा बहुलम्, भस्य, पादः पत्, वसोः सम्प्रसारणम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

षष्ठसत्रम्

द्वितीयपत्रम् - काशिकावृत्तिः (सप्तमोऽध्यायः)

Code-BVSAMJ-602 Credit-5

पूर्णाङ्कः:-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः:-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः:-25

समयः:-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- तिङ् तथा सुप् प्रत्ययों से सम्बद्ध आदेश एवं आगमों के विधान का सम्यक् ज्ञान कराना।
- परस्मैपदपरक वृद्धि, आर्धधातुक प्रत्ययों को इट् निषेध, इट् विधि, तथा युष्मद् अस्मद् इत्यादि सर्वनाम शब्दों को विभक्ति के परे रहते कार्यों के विधान का बोध ।
- पूर्वोत्तरपद वृद्धि, धातु एवं विभक्ति सम्बन्धी विविध कार्यों का बोध ।
- धातु एवं अभ्यास सम्बन्धि विविध कार्यों का ज्ञान ।

परिणामः

- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले सुबन्त और तिङन्त पदों के माध्यम से भाषा के लालित्य से साहित्यिक जगत में नई रचनायें कर सकते हैं।
- भाषा में प्रयुक्त होने वाले कृदन्त एवं तिङन्त पदों में विभिन्न विषयों में निबन्ध से समाज का उचित मार्गदर्शन कर पाते हैं।
- तिङन्त में होने वाले विविध कार्यों का बोधन कराने से अन्य शास्त्रों के गाम्भीर्य को सरलता से प्रकाशित कर सकेंगे।

काशिकावृत्तिः (सप्तमोऽध्यायः)

इकाई-1 युवोरनाकौ (7.1.1)- गोः पादान्ते (7.1.57)

युवोरनाकौ, आयनेयीनीयियः फढखछघ्रां प्रत्ययादीनाम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 इदितो नुम् धातोः (7.1.58)- बहुलं छन्दसि (7.1.103)

इदितो नुम् धातोः, शे मुचादीनाम्, मस्जिनशोर्झलि इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 सिचि वृद्धिः..... (7.2.1)- किति च (7.2.118)

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु, अतो ल्रान्तस्य, वदव्रजहलन्तस्ययाचः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 देविकाशिंशपादित्य.... (7.3.1)-आडो नास्त्रियाम् (7.3.120)

देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात्, केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-5 णौ चड्युपधाया..... (7.4.1)-ई च गणः (7.4.97)

णौ चड्युपधाया ह्रस्वः, नाग्लोपिशास्वृदिताम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

षष्ठसत्रम्

तृतीयपत्रम् - काशिकावृत्तिः (अष्टमोऽध्यायः)

Code-BVSAMJ-603 Credit-5

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- पदसम्बन्धि द्वित्व, पद से उत्तर युष्मद् अस्मद् को होने वाले आदेश एवं स्वरविषयक बोध ।
- पूर्वत्रासिद्ध प्रकरण के अन्तर्गत निष्ठा, प्लुत उदात्त एवं संहिता विषयक मूर्धन्य, णत्व इत्यादि विविध कार्यों का बोध कराना

परिणामः

- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले वीप्सादि अर्थों का बोधन करा सकता है व लालित्यपूर्ण संस्कृत सम्भाषण कर पाते हैं।
- भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में षत्व और णत्व का विवेचन पूर्वक बोध प्राप्त कर भाषागत त्रुटियों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।
- विविध शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों के नकार लोप, रुत्वादि कार्यों को जानकर उनके स्पष्ट अर्थों को अधिगम करते हुए निर्भ्रान्त बोध कर शास्त्रों के स्पष्ट व शुद्ध स्वरूप को जानकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।

काशिकावृत्तिः (अष्टमोऽध्यायः)

इकाई-1 सर्वस्य द्वे (8.1.1)- विभाषितं विशेषवचने.... (8.1.74)

सर्वस्य द्वे, तस्य परमामेडितम्, अनुदात्तं च इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-2 पूर्वत्रासिद्धम् (8.2.1)- तयोर्वावचि.... (8.2.108)

पूर्वत्रासिद्धम्, नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति, नमुने इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-3 मतुवसो रु सम्बुद्धौ... (8.3.1)- इडाया वा (8.3.54)

मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि, अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-4 अपदान्तस्य मूर्धन्यः (8.3.55)-निव्यभिष्योऽङ्..... (8.3.117)

अपदान्तस्य मूर्धन्यः, सहेः साडः सः, इणकोः इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-5 रषाभ्यां नो णः..... (8.4.1)-अ अ (8.4.68)

रषाभ्यां नो णः समानपदे, अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इत्यादीनि सूत्राणि।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
श्रीमद्दयानन्दवेदार्थमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरियाणा।

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्
षष्ठसत्रम्
चतुर्थपत्रम् - वैदिकसाहित्यं दर्शनपरिचयश्च-III
Code-BVSAMN-604 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- काव्यदीपिका में श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य के द्वारा दृश्यश्रव्य काव्य के विभाग व लक्षण, अभिनय के स्वरूप तथा उसके भेदों का बोध।
- यास्क मुनि कृत निरुक्त के माध्यम से निघण्टु शब्द की व्याख्या, पद के चार भेद तथा षड्विकारों का ज्ञान कराना।
- कठोपनिषद् में वर्णित उद्दालक से नचिकेता के प्रश्न, यम नचिकेता संवाद का बोध कराना।
- गीता के 16वें 17वें अध्याय के माध्यम से दैवी आसुरी सम्पद् तथा श्रद्धात्रय विभाग का भलीभाँति बोध कराना।

परिणामः

- दृश्यश्रव्य काव्य और अभिनय के भेदों को पहचान कर अभिनय की महत्ता से समाज को परिचित करा पाता है।
- चार पद और षड् भावविकारों को जानकर तत्त्व के बोधन में समर्थ हो जाता है।
- वैशेषिक दर्शन के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर कुशलतापूर्वक बोधन व जागरण करने में समर्थ होता है।
- यम नचिकेता संवाद से तत्त्वबोध पूर्वक समस्त प्राणियों में आत्मदृष्टि रखते हुए जगतहित में प्रवृत्त हो कर समाज में हिंसा, लोभ, लालच के उन्मूलन में समर्थ होता है।
- दैवी सम्पद् से युक्त होकर एवं श्रद्धा के तत्त्व को समझकर समाज में तद्विषयक ज्ञान का विस्तार से दिव्य व भव्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इकाई-1 काव्यशास्त्रम्- (काव्यदीपिका शिखा 8, अष्टं शिखालोकश्च)

१५

(क) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-2 न्यायदर्शनम् (प्रथमाध्याय)

१५

प्रमाण प्रमेय संशय इत्यादि तत्वानां, प्रत्यक्षानुमान इत्यादि प्रमाणानां उद्देशं लक्षणं च।

(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) सूत्रार्थबोधनम् (ग) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-3 उपनिषद् कठोपनिषद् (प्रथमोऽध्यायः)

१०

(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्

इकाई-4 श्रीमद्भगवद् गीता (अध्याय-16, 17)

१५

दैवी सम्पद् का लक्षण, आसुरी सम्पद् का लक्षण इत्यादि। श्रद्धात्रय विभाग इत्यादि।

(क) श्लोकपूर्तिः (ख) पदपदार्थज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्-

- काव्यदीपिका-विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली।
- न्यायदर्शन - प्रकाशकः - चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
- श्रीमद्भगवद् गीता - दिव्य प्रकाशन

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

षष्ठसत्रम्

पंचमपत्रम् - ज्योतिष एवं लघु शोध प्रबन्ध

Code-BVSAMN-605 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100

बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75

आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25

समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

1. ज्योतिष्य का सामान्य परिचय कराना।
2. कुण्डली निर्माण इत्यादि का बोध कराना।
3. शोध लेखन सामर्थ्य का विकास करना।

प्रथम इकाई- धर्मजिज्ञासाधिकरणम्, धर्मलक्षणाधिकरणम्, धर्मे प्रामाण्यपरीक्षाधिकरणम्, धर्मस्य प्रत्यक्षाद्यगम्यत्वाधिकरणम्, धर्मचोदनाप्रामाण्याधिकरणम्, शब्दनित्यत्वाधिकरणम्, पदार्थमूलतया वाक्यार्थप्रामाण्याधिकरणम्, वेदाऽपौरुषेयत्वाधिकरणम्

द्वितीय इकाई - ज्योतिष शास्त्र का परिचय ज्योतिष शास्त्र के भेद (सिद्धान्त, संहिता, होरा, वास्तु, रमल, प्रश्न, शकुन, ताजिकादि का परिचय), ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख आचार्यों का परिचय, ज्योतिषशास्त्र का विकासक्रम, आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, श्रीपति, भास्कर, कमलाकर, सामन्तचन्द्र शेखर आदि का परिचय, ज्योतिषशास्त्रीय, प्रमुख कृतियां, सूर्यसिद्धान्त, पंचसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, सिद्धान्तशिरोमणि, बृहज्जातक आदि का परिचय।

तृतीय इकाई - पंचांग परिचय.. तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, अयन, गोल, पक्षऋतु, मासादि का परिचय, कालमान विचार, नवविध कालमान ब्राह्म दिव्य गौरव प्राजापत्य सौर नाक्षत्र आदि कालमानों का परिचय, शक संवत् विचार।

राशि परिचय राशि स्वरूप राशि स्वामी राशि स्वभाव राशि वर्ण राशि स्थान कालपुरुष विवेचन, ग्रह परिचय ग्रह स्वरूप उच्च नीच विचार मूलत्रिकोण आत्मादि विचार राजादि विचार, ग्रहबलविचार एवं मैत्री विचार, षड्बलविचार नैसर्गिक एवं तात्कालिक मित्रामित्र विचार पंचधा मैत्री विचार, (मित्र, सम, शत्रु आदि का विचार)

चतुर्थ इकाई - कुण्डली परिचय, कुण्डली का सामान्य परिचय द्वादश भाव विचार, भावकारक ग्रह विचार, भावों की केन्द्रादि संज्ञा विचार, विविध भावों से विचारणीय विषय ग्रहों से विचारणीय विषय, वर्ग परिचय षड्वर्ग सप्तवर्ग दशवर्ग षोडशवर्ग, दशा परिचय विंशोत्तरी दशा अष्टोत्तरी दशा, योगिनी दशा।

पञ्चम इकाई - लघु शोध प्रबन्ध लेखन।

परिणाम-

1. ज्योतिष के सामान्य परिचय से कालगणना करने में समर्थ हो जाता है।
2. जन्म कुण्डली आदि के सत्यस्वरूप को समझा जाता है।
3. नवीन शोधकार्य करने में समर्थ हो जाता है।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ- मीमांसा दर्शन-आचार्य उदयवीर शास्त्री प्रकाशकर विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली

मुहूर्त्तचिंतामणि, भारतीय ज्योतिष, भारतीय कुंडली विज्ञान, लघुजातकम्, जातकालंकार, जातकपारिजात, ताजिकनीकंठी, षट्पंचाशिका, जातकतत्वम्, सूर्यसिद्धान्त।